بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓىٕكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ

लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया वोह भी तुम्हीं में से हैं[144] और रिश्ते वाले

بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۷۵﴾ ع

एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक हैं अल्लाह की किताब में[145] बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है

ركوعاتها ١٦ ﴿٩ سُورَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ ١١٣﴾ اٰياتها ١٢٩

सूरए तौबह मदनिय्या है इस में एक सो उन्तीस आयतें और सोलह रुकूअ़ हैं[1]

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱﴾ ط

बेज़ारी का हुक्म सुनाना है अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ से उन मुश्रिकों को जिन से तुम्हारा मुआ़हदा था और वोह क़ाइम न रहे[2]

فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي

तो चार महीने ज़मीन पर चलो फिरो और जान रखो कि तुम अल्लाह को थका नहीं

144 : और तुम्हारे ही हुक्म में हैं ऐ मुहाजिरीन व अन्सार। **मुहाजिरीन के कई तबक़े हैं :** एक वोह हैं जिन्हों ने पहली मरतबा मदीनए तृय्यिबा को हिजरत की उन्हें मुहाजिरीने अव्वलीन कहते हैं। कुछ वोह हज़रात हैं जिन्हों ने पहले हबशा की तरफ़ हिजरत की, फिर मदीनए तृय्यिबा उन्हें अस्हाबुल हिज्रतैन कहते हैं। बा'ज़ हज़रात वोह हैं जिन्हों ने सुल्हे हुदैबिया के बा'द फ़त्हे मक्का से क़ब्ल हिजरत की येह अस्हाबे हिजरते सानिया कहलाते हैं। पहली आयत में मुहाजिरीने अव्वलीन का ज़िक्र है और इस आयत में अस्हाबे हिजरते सानिया का। **145 :** इस आयत से तवारुस बिल हिजरत (हिजरत की वज्ह से जो विरासत में हिस्सा मिलता था) मन्सूख़ किया गया और ज़विल अरहाम (रिश्ते वालों) की विरासत साबित हुई। **1 :** सूरए तौबह मदनिय्या है मगर इस के अख़ीर की आयतें "لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ" से अख़ीर तक इन को बा'ज़ उलमा मक्की कहते हैं। इस सूरत में सोलह 16 रुकूअ़ एक सो उन्तीस 129 आयतें चार हज़ार अठत्तर 4078 कलिमे दस हज़ार चार सो अठासी 10488 हर्फ़ हैं। इस सूरत के दस नाम हैं उन में से तौबह और बराअत दो नाम मश्हूर हैं। इस सूरत के अव्वल में "بِسْمِ اللّٰه" नहीं लिखी गई इस की अस्ल वज्ह येह है कि जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام इस सूरत के साथ "بِسْمِ اللّٰه" ले कर नाज़िल ही नहीं हुए थे और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने "بِسْمِ اللّٰه" लिखने का हुक्म नहीं फ़रमाया। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा से मरवी है कि "بِسْمِ اللّٰه" अमान है और येह सूरत तलवार के साथ अम्न उठा देने के लिये नाज़िल हुई। बुख़ारी ने हज़रते बराअ से रिवायत किया कि कुरआने करीम की सूरतों में सब से आख़िर येही सूरत नाज़िल हुई। **2 :** मुश्रिकीने अ़रब और मुसल्मानों के दरमियान अ़हद था, उन में से चन्द के सिवा सब ने अ़हद शिकनी की तो उन अ़हद शिकनों का अ़हद साक़ित कर दिया गया और हुक्म दिया गया कि चार महीने वोह अम्न के साथ जहां चाहें गुज़ारें उन से कोई तअ़र्रुज़ न किया जाएगा, इस अ़र्से में उन्हें मौक़अ़ है कि ख़ूब सोच समझ लें कि उन के लिये क्या बेहतर है और अपनी एहतियातें कर लें और जान लें कि इस मुद्दत के बा'द इस्लाम मन्ज़ूर करना होगा या क़त्ल। येह सूरत 9 सि. हिजरी में फ़त्हे मक्का से एक साल बा'द नाज़िल हुई, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस सनह में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه को अमीरे हज मुक़र्रर फ़रमाया था और इन के बा'द अ़लिय्ये मुर्तज़ा को मज्मए हुज्जाज में येह सूरत सुनाने के लिये भेजा। चुनान्चे हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा ने दस ज़िल हिज्जा को जम्रए अ़क़बा के पास खड़े हो कर निदा की "يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ" मैं तुम्हारी तरफ़ रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़िरिस्तादा (भेजा हुवा) आया हूं। लोगों ने कहा : आप क्या पयाम लाए हैं ? तो आप ने तीस या चालीस आयतें इस सूरते मुबारका की तिलावत फ़रमाईं, फिर फ़रमाया मैं चार हुक्म लाया हूं : (1) इस साल के बा'द कोई मुश्रिक का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पास न आए। (2) कोई शख़्स बरहना हो कर का'बए मुअ़ज़्ज़मा का तृवाफ़ न करे। (3) जन्नत में मोमिन के सिवा कोई दाख़िल न होगा। (4) जिस का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़हद है वोह अ़हद अपनी मुद्दत तक रहेगा और जिस की मुद्दत मुअ़य्यन नहीं है उस की मीआ़द चार माह पर तमाम हो जाएगी। मुश्रिकीन ने येह सुन कर कहा कि ऐ अ़ली ! अपने चचा के फ़रज़न्द (या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) को ख़बर दे दीजिये कि हम ने अ़हद पसे पुश्त फेंक दिया हमारे उन के दरमियान कोई अ़हद नहीं है बजुज़ नेज़ा बाज़ी और तेग़ ज़नी के। इस वाक़िए में ख़िलाफ़ते हज़रते सिद्दीक़े अक्बर की तरफ़ एक लतीफ़ इशारा है कि हुज़ूर ने हज़रते अबू बक्र को तो अमीरे हज बनाया और हज़रते अ़लिय्ये मुर्तज़ा को उन के पीछे सूरए बराअत पढ़ने के लिये भेजा तो हज़रते अबू बक्र इमाम हुए और

اللّٰهِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ مُخْزِی الْكٰفِرِیْنَ ﴿۲﴾ وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَى

सकते[3] और येह कि अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है[4] और मुनादी पुकार देना है अल्लाह और उस के रसूल की त़रफ़ से

النَّاسِ یَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِیْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۙ۬ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ

सब लोगों में बड़े ह़ज के दिन[5] कि अल्लाह बेज़ार है मुश्रिकों से और उस का रसूल

فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ اِنْ تَوَلَّیْتُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ غَیْرُ مُعْجِزِی

तो अगर तुम तौबा करो[6] तो तुम्हारा भला है और अगर मुंह फेरो[7] तो जान लो कि तुम अल्लाह को न थका

اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۳﴾ ۙ اِلَّا الَّذِیْنَ عٰهَدْتُّمْ

सकोगे[8] और काफ़िरों को ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की मगर वोह मुश्रिक जिन से तुम्हारा

مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ ثُمَّ لَمْ یَنْقُصُوْكُمْ شَیْـًٔا وَّ لَمْ یُظَاهِرُوْا عَلَیْكُمْ اَحَدًا

मुआ़हदा था फिर उन्हों ने तुम्हारे अ़ह्द में कुछ कमी न की[9] और तुम्हारे मुक़ाबिल किसी को मदद न दी

فَاَتِمُّوْۤا اِلَیْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۴﴾

तो उन का अ़ह्द ठहरी हुई मुद्दत तक पूरा करो बेशक अल्लाह परहेज़ गारों को दोस्त रखता है

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِیْنَ حَیْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ

फिर जब ह़ुरमत वाले महीने निकल जाएं तो मुश्रिकों को मारो[10] जहां पाओ[11]

وَ خُذُوْهُمْ وَ احْصُرُوْهُمْ وَ اقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَ

और उन्हें पकड़ो और क़ैद करो और हर जगह उन की ताक में बैठो फिर अगर वोह तौबा करें[12] और

اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِیْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें तो उन की राह छोड़ दो[13] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला

ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा मुक़्तदी । इस से ह़ज़रते अबू बक्र की तक़्दीम ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा पर साबित हुई । 3 : और बा वुजूद इस मोहलत के उस की गिरिफ़्त से नहीं बच सकते । 4 : दुन्या में क़त्ल के साथ और आख़िरत में अ़ज़ाब के साथ । 5 : ह़ज को ह़ज्जे अक्बर फ़रमाया इस लिये कि उस ज़माने में उ़मरह को ह़ज्जे असग़र कहा जाता था और एक क़ौल येह है कि उस ह़ज को ह़ज्जे अक्बर इस लिये कहा गया कि उस साल रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज फ़रमाया था और चूंकि येह जुमुआ़ को वाक़ेअ़ हुवा था इस लिये मुसल्मान उस ह़ज को जो रोज़े जुमुआ़ हो ह़ज्जे वदाअ़ का मुज़क्किर (याद दिलाने वाला) जान कर ह़ज्जे अक्बर कहते हैं । 6 : कुफ़्र व ग़द्र से 7 : ईमान लाने और तौबा करने से 8 : येह वई़दे अ़ज़ीम है और इस में येह ए'लाम (जताना मक़्सूद) है कि अल्लाह तआ़ला अ़ज़ाब नाज़िल करने पर क़ादिर है । 9 : और उस को उस की शर्तों के साथ पूरा किया । येह लोग बनी ज़मुरा थे जो किनाना का एक क़बीला है और इन की मुद्दत के नव महीने बाक़ी रहे थे । 10 : जिन्हों ने अ़ह्द शिकनी की 11 : ह़िल में ख़्वाह ह़रम में किसी वक़्त व मकान की तख़्सीस नहीं । 12 : शिर्क कुफ़्र से और ईमान क़बूल करें 13 : और क़ैद से रिहा कर दो और उन से तअ़र्रुज़ (छेड़छाड़) न करो ।

www.dawateislami.net

رَّحِيْمٌ ۝٥ وَ اِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ

मेहरबान है और ऐ महबूब अगर कोई मुश्रिक तुम से पनाह मांगे[14] तो उसे पनाह दो कि वोह अल्लाह का

كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٦ ع كَيْفَ

कलाम सुने फिर उसे उस की अम्न की जगह पहुंचा दो[15] येह इस लिये कि वोह नादान लोग हैं[16] मुश्रिकों

يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَ عِنْدَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ

के लिये अल्लाह और उस के रसूल के पास कोई अ़हद क्यूंकर होगा[17] मगर वोह जिन से तुम्हारा मुआ़हदा

عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

मस्जिदे ह़राम के पास हुवा[18] तो जब तक वोह तुम्हारे लिये अ़हद पर क़ाइम रहें तुम उन के लिये क़ाइम रहो बेशक

يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٧ كَيْفَ وَ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّ

परहेज़ गार अल्लाह को खुश आते हैं भला क्यूंकर[19] उन का ह़ाल तो येह है कि तुम पर क़ाबू पाएं तो न क़राबत का लिह़ाज़ करें

لَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ تَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَ اَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٨ ج

न अ़हद का अपने मुंह से तुम्हें राज़ी करते हैं[20] और उन के दिलों में इन्कार है और उन में अक्सर बे हुक्म हैं[21]

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا

अल्लाह की आयतों के बदले थोड़े दाम मोल लिये[22] तो उस की राह से रोका[23] बेशक वोह बहुत

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٩ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّ لَا ذِمَّةً ؕ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ

ही बुरे काम करते हैं किसी मुसल्मान में न क़राबत का लिह़ाज़ करें न अ़हद का[24] और वोही

الْمُعْتَدُوْنَ ۝١٠ فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ

सरकश हैं फिर अगर वोह[25] तौबा करें और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें तो वोह तुम्हारे

14 : मोहलत के महीने गुज़रने के बा'द ताकि आप से तौह़ीद के मसाइल और कुरआने पाक सुनें जिस की आप दा'वत देते हैं। **15 :** अगर ईमान न लाए। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि मुस्तामिन को ईज़ा न दी जाए और मुद्दत गुज़रने के बा'द उस को दारुल इस्लाम में इक़ामत का ह़क़ नहीं। **16 :** इस्लाम और इस की ह़क़ीक़त को नहीं जानते तो उन्हें अम्न देनी ऐन ह़िक्मत है ताकि कलामुल्लाह सुनें और समझें। **17 :** कि वोह ग़द्र व अ़हद शिकनी किया करते हैं। **18 :** और उन से कोई अ़हद शिकनी ज़ुहूर में न आई, मिस्ल बनी किनाना व बनी ज़मुरा के। **19 :** अ़हद पूरा करेंगे और कैसे क़ौल पर क़ाइम रहेंगे। **20 :** ईमान और वफ़ाए अ़हद के वा'दे कर के। **21 :** अ़हद शिकन कुफ़्र में सरकश बे मुरव्वत झूट से न शरमाने वाले, उन्हों ने **22 :** और दुन्या के थोड़े से नफ़्अ़ के पीछे ईमान व कुरआन छोड़ बैठे और जो अ़हद रसूले करीम ﷺ से किया था वोह अबू सुफ़्यान के थोड़े से लालच देने से तोड़ दिया। **23 :** और लोगों को दीने इलाही में दाख़िल होने से मानेअ़ हुए। **24 :** जब मौक़अ़ पाएं क़त्ल कर डालें। तो मुसल्मानों को भी चाहिये कि जब मुश्रिकीन पर दस्त रस हो (क़ाबू) पाएं तो उन से दर गुज़र न करें। **25 :** कुफ़्र व अ़हद शिकनी से बाज़ आएं और ईमान क़बूल कर के।

www.dawateislami.net

فِی الدِّیْنِؕ وَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿١١﴾ وَ اِنْ نَّكَثُوْۤا اَیْمَانَهُمْ

दीनी भाई हैं[26] और हम आयतें मुफ़स्सल (खोल खोल कर) बयान करते हैं जानने वालों के लिये[27] और अगर अ़हद कर के

مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَ طَعَنُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ فَقَاتِلُوْۤا اَىٕمَّةَ الْكُفْرِۙ اِنَّهُمْ لَاۤ

अपनी क़समें तोड़ें और तुम्हारे दीन पर मुंह आएं (ए'तिराज़ व ता'न करें) तो कुफ़्र के सरग़नों से लड़ो[28] बेशक उन की

اَیْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ یَنْتَهُوْنَ ﴿١٢﴾ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْۤا اَیْمَانَهُمْ

क़समें कुछ नहीं इस उम्मीद पर कि शायद वोह बाज़ आएं[29] क्या उस क़ौम से न लड़ोगे जिन्हों ने अपनी क़समें तोड़ीं[30]

وَ هَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَ هُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍؕ اَتَخْشَوْنَهُمْۚ

और रसूल के निकालने का इरादा किया[31] ह़ालां कि उन्हीं की त़रफ़ से पहल हुई है क्या उन से डरते हो

فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿١٣﴾ قَاتِلُوْهُمْ یُعَذِّبْهُمُ

तो **अल्लाह** इस का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है कि उस से डरो अगर ईमान रखते हो तो उन से लड़ो **अल्लाह** उन्हें अ़ज़ाब

اللّٰهُ بِاَیْدِیْكُمْ وَ یُخْزِهِمْ وَ یَنْصُرْكُمْ عَلَیْهِمْ وَ یَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ

देगा तुम्हारे हाथों और उन्हें रुस्वा करेगा[32] और तुम्हें उन पर मदद देगा[33] और ईमान वालों का जी

مُّؤْمِنِیْنَ ﴿١٤﴾ وَ یُذْهِبْ غَیْظَ قُلُوْبِهِمْؕ وَ یَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ یَّشَآءُؕ

ठन्डा करेगा और उन के दिलों की घुटन (जलन व ग़ुस्सा) दूर फ़रमाएगा[34] और **अल्लाह** जिस की चाहे तौबा क़बूल फ़रमाए[35]

وَ اللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ﴿١٥﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَ لَمَّا یَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِیْنَ

और **अल्लाह** इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है क्या इस गुमान में हो कि यूंही छोड़ दिये जाओगे और अभी **अल्लाह** ने पहचान न कराई उन की जो

جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَ لَمْ یَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لَا رَسُوْلِهٖ وَ لَا الْمُؤْمِنِیْنَ

तुम में से जिहाद करेंगे[36] और **अल्लाह** और उस के रसूल और मुसल्मानों के सिवा किसी को अपना मह़रमे राज़

26 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित हुवा कि अहले क़िब्ला के ख़ून ह़राम हैं। **27 :** इस से साबित हुवा कि तफ़्सीले आयात पर जिस को नज़र हो वोह आ़लिम है। **28 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जो काफ़िरे ज़िम्मी दीने इस्लाम पर ज़ाहिर ता'न करे उस का अ़हद बाक़ी नहीं रहता और वोह ज़िम्मे से ख़ारिज हो जाता है उस को क़त्ल करना जाइज़ है। **29 :** इस आयत से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार के साथ जंग करने से मुसल्मानों की ग़रज़ उन्हें कुफ़्र व बद आ'माली से रोक देना है। **30 :** और सुल्हे हुदैबिया का अ़हद तोड़ा और मुसल्मानों के ह़लीफ़ ख़ुज़ाआ़ के मुक़ाबिल बनी बक्र की मदद की **31 :** मक्कए मुकर्रमा से दारुन्नदवा में मश्वरा कर के। **32 :** क़त्ल व क़ैद से **33 :** और उन पर ग़लबा अ़ता फ़रमाएगा **34 :** येह तमाम मवाईद (वा'दे) पूरे हुए और नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़बरें सादिक़ हुईं और नुबुव्वत का सुबूत वाज़ेह़ तर हो गया। **35 :** इस में अश्आर है कि बा'ज़ अहले मक्का कुफ़्र से बाज़ आ कर ताइब होंगे, येह ख़बर भी ऐसी ही वाक़ेअ़ हो गई। चुनान्चे अबू सुफ़्यान और इ़क्रिमा बिन अबू जहल और सुहैल बिन अ़म्र ईमान से मुशर्रफ़ हुए। **36 :** इख़्लास के साथ **अल्लाह** की राह में।

www.dawateislami.net

ع ٢/٨

وَلِيۡجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۶﴾ مَا كَانَ لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ اَنۡ يَّعۡمُرُوۡا

न बनाएंगे[37] और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है मुशिरकों को नहीं पहुंचता कि अल्लाह की

مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيۡنَ عَلٰٓى اَنۡفُسِهِمۡ بِالۡكُفۡرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ ۖۚ

मस्जिदें आबाद करें[38] ख़ुद अपने कुफ़्र की गवाही दे कर[39] उन का तो सब किया धरा अकारत (ज़ाएअ़) है

وَفِى النَّارِ هُمۡ خٰلِدُوۡنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّمَا يَعۡمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ

और वोह हमेशा आग में रहेंगे[40] अल्लाह की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो अल्लाह और

الۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمۡ يَخۡشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى

क़ियामत पर ईमान लाते और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और ज़कात देते हैं[41] और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते[42] तो क़रीब है कि

اُولٰٓئِكَ اَنۡ يَّكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُهۡتَدِيۡنَ ﴿۱۸﴾ اَجَعَلۡتُمۡ سِقَايَةَ الۡحَآجِّ وَ

येह लोग हिदायत वालों में हों तो क्या तुम ने हाजियों की सबील और

عِمَارَةَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ كَمَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِىۡ

मस्जिदे हराम की ख़िदमत उस के बराबर ठहरा ली जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह

37 : इस से मा'लूम हुवा कि मुख़्लिस और ग़ैर मुख़्लिस में इम्तियाज़ कर दिया जाएगा और मक़्सूद इस से मुसल्मानों को मुश्रिकीन की मुवालात (आपस की दोस्ती व तअ़ल्लुक़) और उन के पास मुसल्मानों के राज़ पहुंचाने से मुमानअ़त करना है। **38 :** मस्जिदों से मस्जिदे हराम का'बए मुअ़ज़्ज़मा मुराद है, इस को जम्अ़ के सीग़े से इस लिये ज़िक्र फ़रमाया कि वोह तमाम मस्जिदों का क़िब्ला और इमाम है, इस का आबाद करने वाला ऐसा है जैसे तमाम मस्जिदों को आबाद करने वाला और जम्अ़ का सीग़ा लाने की येह वज्ह भी हो सकती है कि हर बुक़्आ़ (हर हिस्सा व टुकड़ा) मस्जिदे हराम का मस्जिद है। और येह भी हो सकता है कि मस्जिदों से जिन्स मुराद हो और का'बए मुअ़ज़्ज़मा इस में दाख़िल हो क्यूं कि वोह इस जिन्स का सद्र है। **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के रुअसा की एक जमाअ़त जो बद्र में गिरिफ़्तार हुई और उन में हुज़ूर के चचा हज़रते अ़ब्बास भी थे उन को अस्हाबे किराम ने शिर्क पर आ़र दिलाई और हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा ने तो ख़ास हज़रते अ़ब्बास को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुक़ाबिल आने पर बहुत सख़्त सुस्त कहा। हज़रते अ़ब्बास कहने लगे कि तुम हमारी बुराइयां तो बयान करते हो और हमारी ख़ूबियां छुपाते हो ! उन से कहा गया कि क्या आप की कुछ ख़ूबियां भी हैं ? उन्हों ने कहा : हां, हम तुम से अफ़्ज़ल हैं, हम मस्जिदे हराम को आबाद करते हैं, का'बे की ख़िदमत करते हैं, हाजियों को सैराब करते हैं, असीरों को रिहा कराते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि मस्जिदों का आबाद करना काफ़िरों को नहीं पहुंचता क्यूं कि मस्जिद आबाद की जाती है अल्लाह की इबादत के लिये तो जो ख़ुदा ही का मुन्किर हो उस के साथ कुफ़्र करे वोह क्या मस्जिद आबाद करेगा। और आबाद करने के मा'ना में भी कई क़ौल हैं : **एक** तो येह कि आबाद करने से मस्जिद का बनाना, बुलन्द करना, मरम्मत करना मुराद है काफ़िर को इस से मन्अ़ किया जाएगा। **दूसरा** क़ौल येह है कि मस्जिद आबाद करने से इस में दाख़िल होना, बैठना मुराद है। **39 :** और बुत परस्ती का इक़्रार कर के, या'नी येह दोनों बातें किस तरह जम्अ़ हो सकती हैं कि आदमी काफ़िर भी हो और ख़ास इस्लामी और तौहीद के इबादत ख़ाने को आबाद भी करे **40 :** क्यूं कि हालते कुफ़्र के आ'माल मक़्बूल नहीं, न मेहमान दारी, न हाजियों की ख़िदमत, न क़ैदियों का रिहा कराना, इस लिये कि काफ़िर का कोई फ़े'ल अल्लाह के लिये तो होता नहीं लिहाज़ा उस का अ़मल सब अकारत (ज़ाएअ़) है और अगर वोह इसी कुफ़्र पर मर जाए तो जहन्नम में उन के लिये हमेशगी का अ़ज़ाब है। **41 :** इस आयत में येह बयान किया गया कि मस्जिदों के आबाद करने के मुस्तहिक़ मोमिनीन हैं। मस्जिदों के आबाद करने में येह उमूर भी दाख़िल हैं : झाड़ू देना, सफ़ाई करना, रोशनी करना और मस्जिदों को दुन्या की बातों से और ऐसी चीज़ों से महफ़ूज़ रखना जिन के लिये वोह नहीं बनाई गईं। मस्जिदें इबादत करने और ज़िक्र करने के लिये बनाई गई हैं और इल्म का दर्स भी ज़िक्र में दाख़िल है। **42 :** या'नी किसी की रिज़ा को रिज़ाए इलाही पर किसी अन्देशे से भी मुक़द्दम नहीं करते। येही मा'ना हैं अल्लाह से डरने और ग़ैर से न डरने के।

www.dawateislami.net

سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ

में जिहाद किया वोह अल्लाह के नज़्दीक बराबर नहीं और अल्लाह ज़ालिमों को राह

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

وقف لازم

नहीं देता[43] वोह जो ईमान लाए और हिजरत की और अपने माल जान से

بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ

अल्लाह की राह में लड़े अल्लाह के यहां उन का दरजा बड़ा है[44] और वोही

الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ رِضْوَانٍ وَّ جَنّٰتٍ لَّهُمْ

मुराद को पहुंचे[45] उन का रब उन्हें ख़ुशी सुनाता है अपनी रहमत और अपनी रिज़ा की[46] और उन बाग़ों की

فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾

जिन में उन्हें दाइमी ने'मत है हमेशा हमेशा उन में रहेंगे बेशक अल्लाह के पास बड़ा सवाब है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰبَآءَكُمْ وَ اِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا

ऐ ईमान वालो अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वोह ईमान पर

الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

कुफ़्र पसन्द करें और तुम में जो कोई उन से दोस्ती करेगा तो वोही ज़ालिम हैं[47]

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ وَ اِخْوَانُكُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ

तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुम्बा

وَ اَمْوَالُ اِقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ

और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान

43 : मुराद येह है कि कुफ़्फ़ार को मोमिनीन से कुछ निस्बत नहीं न उन के आ'माल को इन के आ'माल से, क्यूं कि काफ़िर के आ'माल राएगां हैं ख़्वाह वोह हाजियों के लिये सबील लगाएं या मस्जिदे हराम की ख़िदमत करें, उन के आ'माल को मोमिन के आ'माल के बराबर क़रार देना ज़ुल्म है। **शाने नुज़ूल :** रोज़े बद्र जब हज़रते अ़ब्बास गिरिफ़्तार हो कर आए तो उन्हों ने अस्हाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा कि तुम को इस्लाम और हिजरत व जिहाद में सब्क़त हासिल है तो हम को भी मस्जिदे हराम की ख़िदमत और हाजियों के लिये सबीलें लगाने का शरफ़ हासिल है। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और आगाह किया गया कि जो अ़मल ईमान के साथ न हों वोह बेकार हैं। 44 : दूसरों से 45 : और उन्हीं को दुन्या व आख़िरत की सआ़दत मिली 46 : और येह आ'ला तरीन बिशारत है क्यूं कि मालिक की रहमत व रिज़ा बन्दे का सब से बड़ा मक़्सद और प्यारी मुराद है। 47 : जब मुसल्मानों को मुश्रिकीन से तर्के मुवालात (तअ़ल्लुक़ात ख़त्म करने) का हुक्म दिया गया तो बा'ज़ लोगों ने कहा येह कैसे मुम्किन है कि आदमी अपने बाप भाई वग़ैरा क़राबत दारों से तर्के तअ़ल्लुक़ करे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि कुफ़्फ़ार से मुवालात जाइज़ नहीं चाहे उन से कोई भी रिश्ता हो। चुनान्चे आगे इर्शाद फ़रमाया।

www.dawateislami.net

أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُولِهٖ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهٖ فَتَرَبَّصُوا حَتّٰى

येह चीजें़ अल्लाह और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो रास्ता देखो (इन्तिज़ार करो) यहां तक कि

يَأْتِيَ اللّٰهُ بِأَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِينَ ﴿٢٤﴾ ع لَقَدْ نَصَرَكُمُ

अल्लाह अपना हुक्म लाए[48] और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता बेशक अल्लाह ने

اللّٰهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ

बहुत जगह तुम्हारी मदद की[49] और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत पर इतरा गए थे तो

تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ

वोह तुम्हारे कुछ काम न आई[50] और ज़मीन इतनी वसीअ़ हो कर तुम पर तंग हो गई[51] फिर तुम पीठ दे कर

مُّدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾ ج ثُمَّ أَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِينَتَهٗ عَلٰى رَسُولِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ

फिर गए फिर अल्लाह ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल पर[52] और मुसल्मानों पर[53]

وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ

और वोह लश्कर उतारे जो तुम ने न देखे[54] और काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया[55] और मुन्किरों की

48 : और जल्दी आने वाले अ़ज़ाब में मुब्तला करे या देर में आने वाले में। इस आयत से साबित हुवा कि दीन के महफ़ूज़ रखने के लिये दुन्या की मशक़्क़त बरदाश्त करना मुसल्मान पर लाज़िम है और अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त के मुक़ाबिल दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात कुछ क़ाबिले इल्तिफ़ात नहीं और ख़ुदा और रसूल की महब्बत ईमान की दलील है। **49 :** या'नी रसूले करीम صلى الله عليه وسلم के ग़ज़वात में मुसल्मानों को काफ़िरों पर ग़लबा अ़ता फ़रमाया, जैसा कि वाक़िअ़ए बद्र और क़ुरैज़ा और नज़ीर और हुदैबिया और ख़ैबर और फ़त्हे मक्का में। **50 :** हुनैन एक वादी है ताइफ़ के क़रीब मक्कए मुकर्रमा से चन्द मील के फ़ासिले पर, यहां फ़त्हे मक्का से थोड़े ही रोज़ बा'द क़बीलए हवाज़ुन व सक़ीफ़ से जंग हुई। इस जंग में मुसल्मानों की ता'दाद बहुत कसीर बारह हज़ार या इस से ज़ाइद थी और मुश्रिकीन चार हज़ार थे, जब दोनों लश्कर मुक़ाबिल हुए तो मुसल्मानों में से किसी शख़्स ने अपनी कसरत पर नज़र कर के येह कहा कि अब हम हरगिज़ मग़्लूब न होंगे। येह कलिमा रसूले करीम صلى الله عليه وسلم को बहुत गिरां गुज़रा क्यूं कि हुज़ूर हर हाल में अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल फ़रमाते थे और ता'दाद की क़िल्लत व कसरत पर नज़र न रखते थे। जंग शुरूअ़ हुई और क़िताले शदीद हुवा मुश्रिकीन भागे और मुसल्मान ग़नीमत लेने में मसरूफ़ हो गए तो भागे हुए लश्कर ने इस को ग़नीमत समझा और तीरों की बारिश शुरूअ़ कर दी और तीर अन्दाज़ी में वोह बहुत महारत रखते थे। नतीजा येह हुवा कि इस हंगामे में मुसल्मानों के क़दम उखड़ गए लश्कर भाग पड़ा और सय्यिदे आ़लम صلى الله عليه وسلم के पास सिवाए हुज़ूर के चचा हज़रते अ़ब्बास और आप के इब्ने अ़म अबू सुफ़्यान बिन हारिस के और कोई बाक़ी न रहा, हुज़ूर ने उस वक़्त अपनी सुवारी को कुफ़्फ़ार की तरफ़ आगे बढ़ाया और हज़रते अ़ब्बास को हुक्म दिया कि वोह बुलन्द आवाज़ से अपने अस्हाब को पुकारें, उन के पुकारने से वोह लोग लब्बैक लब्बैक कहते हुए पलट आए और कुफ़्फ़ार से जंग (फिर से) शुरूअ़ हो गई, जब लड़ाई ख़ूब गर्म हुई हुज़ूर ने अपने दस्ते मुबारक में संगरेज़े ले कर कुफ़्फ़ार के मूंहों पर मारे और फ़रमाया : रब्बे मुहम्मद की क़सम भाग निकले, संगरेज़ों का मारना था कि कुफ़्फ़ार भाग पड़े और रसूले करीम صلى الله عليه وسلم ने उन की ग़नीमतें मुसल्मानों को तक़्सीम फ़रमा दीं। इन आयतों में इस वाक़िए का बयान है। **51 :** और तुम वहां न ठहर सके। **52 :** कि इत्मीनान के साथ अपनी जगह क़ाइम रहे। **53 :** कि हज़रते अ़ब्बास رضي الله عنه के पुकारने से नबिय्ये करीम صلى الله عليه وسلم की ख़िदमत में वापस आए। **54 :** या'नी फ़िरिश्ते जिन्हें कुफ़्फ़ार ने अब्लक़ घोड़ों पर सफ़ेद लिबास पहने इमामा बांधे देखा। येह फ़िरिश्ते मुसल्मानों की शौकत बढ़ाने के लिये आए थे, इस जंग में उन्हों ने क़िताल नहीं किया क़िताल सिर्फ़ बद्र में किया था। **55 :** कि पकड़े गए, मारे गए, उन के इयाल व अम्वाल मुसल्मानों के हाथ आए।

www.dawateislami.net

الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

यही सज़ा है फिर इस के बा'द अल्लाह जिसे चाहेगा तौबा देगा[56] और अल्लाह बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿۲۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا

मेहरबान है ऐ ईमान वालो मुश्रिक निरे (बिल्कुल) नापाक हैं[57] तो इस बरस के बा'द वोह

الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ

मस्जिदे ह़राम के पास न आने पाएं[58] और अगर तुम्हें मोह़ताजी का डर है[59] तो अ़न्क़रीब अल्लाह तुम्हें दौलत मन्द

اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۸﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا

कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे[60] बेशक अल्लाह इल्मो ह़िक्मत वाला है लड़ो उन से जो

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَ

ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और क़ियामत पर[61] और ह़राम नहीं मानते उस चीज़ को जिस को ह़राम किया अल्लाह और

رَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا

उस के रसूल ने[62] और सच्चे दीन[63] के ताबेअ़ नहीं होते या'नी वोह जो किताब दिये गए जब तक

56 : और तौफ़ीक़े इस्लाम अ़ता फ़रमाएगा। चुनान्चे हवाज़ुन के बाक़ी लोगों को तौफ़ीक़ दी और वोह मुसल्मान हो कर रसूले करीम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और ह़ुज़ूर ने उन के असीरों को रिहा फ़रमा दिया। **57 :** कि उन का बात़िन ख़बीस है और वोह न त़हारत करते हैं न नजासतों से बचते हैं। **58 :** न ह़ज के लिये न उ़मरह के लिये और इस साल से मुराद 9 हिजरी है और मुश्रिकीन के मन्अ़ करने के मा'ना येह हैं कि मुसल्मान उन को रोकें। **59 :** कि मुश्रिकीन को ह़ज से रोक देने से तिजारतों को नुक़्सान पहुंचेगा और अहले मक्का को तंगी पेश आएगी। **60 :** इ़क्रिमा ने कहा : ऐसा ही हुवा, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ग़नी कर दिया, बारिशें ख़ूब हुईं, पैदावार कसरत से हुई। मक़ातिल ने कहा कि ख़ित्त़ाहाए यमन के लोग मुसल्मान हुए और उन्हों ने अहले मक्का पर अपनी कसीर दौलतें ख़र्च कीं "अगर चाहे" फ़रमाने में ता'लीम है कि बन्दे को चाहिये कि त़लबे ख़ैर और दफ़्ए आफ़ात के लिये हमेशा अल्लाह की त़रफ़ मुतवज्जेह रहे और तमाम उमूर को उसी की मशिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ जाने। **61 :** अल्लाह पर ईमान लाना येह है कि उस की ज़ात और जुम्ला सिफ़ात व तन्ज़ीहात को माने और जो उस की शान के लाइक़ न हो उस की त़रफ़ निस्बत न करे और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने रसूलों पर ईमान लाना भी अल्लाह पर ईमान लाने में दाख़िल क़रार दिया है तो यहूदो नसारा अगर्चे अल्लाह पर ईमान लाने के मुद्दई हैं लेकिन उन का येह दा'वा बात़िल है क्यूं कि यहूद तज्सीम व तश्बीह (ख़ुदा के इन्सानों की त़रह़ मुजस्सम व मिस्ल होने) के और नसारा ह़ुलूल (ख़ुदा का ईसा के जिस्म में उतर आने) के मो'तक़िद हैं तो वोह किस त़रह़ अल्लाह पर ईमान लाने वाले हो सकते हैं? ऐसे ही यहूद में से जो ह़ज़रते उ़ज़ैर को और नसारा ह़ज़रते मसीह़ को ख़ुदा का बेटा कहते हैं तो इन में से कोई भी अल्लाह पर ईमान लाने वाला न हुवा, इसी त़रह़ जो एक रसूल की तक्ज़ीब करे वोह अल्लाह पर ईमान लाने वाला नहीं। यहूदो नसारा बहुत अम्बिया की तक्ज़ीब करते हैं लिहाज़ा वोह अल्लाह पर ईमान लाने वालों में नहीं। **शाने नुज़ूल :** मुजाहिद का क़ौल है कि येह आयत उस वक़्त नाज़िल हुई जब कि नबी ﷺ को रूम से क़िताल करने का ह़ुक्म दिया गया और इसी के नाज़िल होने के बा'द ग़ज़्वए तबूक हुवा। कल्बी का क़ौल है कि येह आयत यहूद के क़बीले क़ुरैज़ा और नज़ीर के ह़क़ में नाज़िल हुई। सय्यिदे आ़लम ﷺ ने उन से सुल्ह़ मन्ज़ूर फ़रमाई और येही पहला जिज़्या है जो अहले इस्लाम को मिला और पहली ज़िल्लत है जो कुफ़्फ़ार को मुसल्मानों के हाथ से पहुंची। **62 :** क़ुरआनो ह़दीस में, और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि मा'ना येह हैं कि तौरैत व इन्जील के मुत़ाबिक़ अ़मल नहीं करते उन की तह़रीफ़ (रद्दो बदल) करते हैं और अह़काम अपने दिल से घड़ते हैं। **63 :** इस्लाम दीने इलाही।

www.dawateislami.net

ع ۵ الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَ

अपने हाथ से जिज़्या न दें ज़लील हो कर[64] और यहूदी बोले उ़ज़ैर **अल्लाह** का बेटा है[65] और

قَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ

नसरानी बोले मसीह़ **अल्लाह** का बेटा है येह बातें वोह अपने मुंह से बकते हैं[66] अगले

قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۳۰﴾ اِتَّخَذُوْۤا

काफ़िरों की सी बात बनाते हैं **अल्लाह** उन्हें मारे कहां औंधे जाते हैं[67] उन्हों ने

اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ

अपने पादरियों और जोगियों को **अल्लाह** के सिवा ख़ुदा बना लिया[68] और मसीह़ इब्ने मरयम को[69]

وَمَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوْۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا

और उन्हें हुक्म न था[70] मगर येह कि एक **अल्लाह** को पूजें उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसे पाकी है

يُشْرِكُوْنَ ﴿۳۱﴾ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ

उन के शिर्क से चाहते हैं कि **अल्लाह** का नूर[71] अपने मुंह से बुझा दें और **अल्लाह** न मानेगा

اِلَّاۤ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۳۲﴾ هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ

मगर अपने नूर का पूरा करना[72] पड़े (अगर्चे) बुरा मानें काफ़िर वोही है जिस ने अपना रसूल[73]

بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ

हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे[74] पड़े बुरा मानें

64 : मुआ़हिदे अहले किताब से जो ख़िराज लिया जाता है उस का नाम जिज़्या है। **मसाइल :** येह जिज़्या नक़्द लिया जाता है इस में उधार नहीं। **मस्अला :** जिज़्या देने वाले को ख़ुद ह़ाज़िर हो कर देना चाहिये। **मस्अला :** पियादा पा (पैदल बिग़ैर सुवारी के) ले कर ह़ाज़िर हो, खड़े हो कर पेश करे। **मस्अला :** क़बूले जिज़्या में तुर्क व हिन्दू वग़ैरा अहले किताब के साथ मुल्ह़िक़ हैं सिवा मुश्रिकीने अ़रब के, कि इन से जिज़्या क़बूल नहीं। **मस्अला :** इस्लाम लाने से जिज़्या साक़ित़ हो जाता है। ह़िक्मत जिज़्या मुक़र्रर करने की येह है कि कुफ़्फ़ार को मोहलत दी जाए ताकि वोह इस्लाम के मह़ासिन और दलाइल की क़ुव्वत देखें और कुतुबे क़दीमा में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़बर और हुज़ूर की ना'त व सिफ़त देख कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने का मौक़अ़ पाएं। **65 :** अहले किताब की बे दीनी का जो ऊपर ज़िक्र फ़रमाया गया येह उस की तफ़्सील है कि वोह **अल्लाह** की जनाब में ऐसे फ़ासिद ए'तिक़ाद रखते हैं और मख़्लूक़ को **अल्लाह** का बेटा बना कर पूजते हैं। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में यहूद की एक जमाअ़त आई वोह लोग कहने लगे कि हम आप का किस त़रह़ इत्तिबाअ़ करें आप ने हमारा क़िब्ला छोड़ दिया और आप ह़ज़रते उ़ज़ैर को ख़ुदा का बेटा नहीं समझते इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **66 :** जिन पर न कोई दलील न बुरहान और फिर अपने जह्ल से इस बात़िले सरीह़ के मो'तक़िद भी हैं। **67 :** और **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत पर हुज्जतें क़ाइम होने और दलीलें वाज़ेह़ होने के बा वुजूद इस कुफ़्र में मुब्तला होते हैं। **68 :** हुक्मे इलाही को छोड़ कर उन के हुक्म के पाबन्द हुए। **69 :** कि उन्हें भी ख़ुदा बनाया और उन की निस्बत येह ए'तिक़ादे बात़िल किया कि वोह ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे हैं या ख़ुदा ने उन में हुलूल किया है। **70 :** उन की किताबों में न उन के अम्बिया की त़रफ़ से **71 :** या'नी दीने इस्लाम या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत के दलाइल। **72 :** और अपने दीन को ग़लबा देना **73 :** मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم। **74 :** और उस की हुज्जत

www.dawateislami.net

النصف

الْمُشْرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَ الرُّهْبَانِ

मुश्रिक ऐ ईमान वालो बेशक बहुत पादरी और जोगी

لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَ

लोगों का माल नाहक़ खा जाते हैं[75] और अल्लाह की राह से[76] रोकते हैं और

الَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَ الْفِضَّةَ وَ لَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते[77]

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا

उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में[78] फिर उस से दाग़ेंगे

جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ وَ ظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا

उन की पेशानियां और करवटें और पीठें[79] येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा

مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا

इस जोड़ने का बेशक महीनों की गिनती अल्लाह के नज़्दीक बारह महीने हैं[80]

فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ

अल्लाह की किताब में[81] जब से उस ने आस्मान व ज़मीन बनाए उन में से चार हुरमत वाले हैं[82]

क़वी करे और दूसरे दीनों को इस से मन्सूख़ करे। चुनान्चे اَلْحَمْدُ لِلّٰه ऐसा ही हुवा। ज़ह्हाक का क़ौल है कि येह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के नुज़ूल के वक़्त ज़ाहिर होगा जब कि कोई दीन वाला ऐसा न होगा जो इस्लाम में दाख़िल न हो जाए। हज़रते अबू हुरैरा की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में इस्लाम के सिवा हर मिल्लत हलाक हो जाएगी। **75 :** इस त़रह़ कि दीन के अह़काम बदल कर लोगों से रिश्वतें लेते हैं और अपनी किताबों में त़मए ज़र (दुन्यवी माल की लालच) के लिये तह़रीफ़ व तब्दील करते हैं और कुतुबे साबिक़ा की जिन आयात में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त मज़्कूर है माल ह़ासिल करने के लिये उन में फ़ासिद तावीलें और तह़रीफ़ें करते हैं। **76 :** इस्लाम से और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने से **77 :** बुख़्ल करते हैं और माल के ह़ुक़ूक़ अदा नहीं करते ज़कात नहीं देते। **शाने नुज़ूल :** सुद्दी का क़ौल है कि येह आयत मानिईने ज़कात के ह़क़ में नाज़िल हुई जब कि अल्लाह तआ़ला ने अह़बार और रुहबान (यहूदी व ईसाई उ़लमा) की ह़िर्से माल का ज़िक्र फ़रमाया तो मुसल्मानों को माल जम्अ़ करने और उस के ह़ुक़ूक़ अदा न करने से हज़र (ख़ौफ़) दिलाया। हज़रते इब्ने उ़मर رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि जिस माल की ज़कात दी गई वोह "कन्ज़" नहीं ख़्वाह दफ़ीना ही हो और जिस की ज़कात न दी गई वोह "कन्ज़" है, जिस का ज़िक्र क़ुरआन में हुवा कि उस के मालिक को उस से दाग़ दिया जाएगा। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ किया कि सोने चांदी का तो येह ह़ाल मा'लूम हुवा तो फिर कौन सा माल बेहतर है जिस को जम्अ़ किया जाए ? फ़रमाया : ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल और नेक बीबी जो ईमानदार की उस के ईमान पर मदद करे या'नी परहेज़ गार हो कि उस की सोह़बत से त़ाअ़त व इ़बादत का शौक़ बढ़े। (رواہ الترمذی) **मस्अला :** माल का जम्अ़ करना मुबाह़ है मज़्मूम नहीं जब कि उस के ह़ुक़ूक़ अदा किये जाएं। हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और हज़रते त़ल्ह़ा वग़ैरा अस्ह़ाब मालदार थे और जो अस्ह़ाब कि जम्ए़ माल से नफ़्रत रखते थे वोह इन पर ए'तिराज़ न करते थे। **78 :** और शिद्दते ह़रारत से सफ़ेद हो जाएगा। **79 :** जिस्म के तमाम अत़राफ़ो जवानिब और कहा जाएगा : **80 :** यहां येह बयान फ़रमाया गया कि अह़कामे शरअ़ की बिना क़मरी महीनों पर है जिन का ह़िसाब चांद से है। **81 :** यहां अल्लाह की किताब से या लौह़े मह़फ़ूज़ मुराद है या क़ुरआन या वोह जो उस ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया। **82 :** तीन मुत्तसिल ज़ुल क़ा'दह

www.dawateislami.net

ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ۬ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَ قَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ

येह सीधा दीन है तो इन महीनों में[83] अपनी जान पर ज़ुल्म न करो और मुश्रिकों से हर वक़्त

كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝٣٦ اِنَّمَا

लड़ो जैसा वोह तुम से हर वक़्त लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह परहेज़ गारों के साथ है[84] उन का

النَّسِيْٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّ

महीने पीछे हटाना नहीं मगर और कुफ़्र में बढ़ना[85] इस से काफ़िर बहकाए जाते हैं एक बरस उसे[86] हलाल ठहराते हैं और

يُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ

दूसरे बरस उसे हराम मानते हैं कि उस गिनती के बराबर हो जाएं जो अल्लाह ने हराम फ़रमाई[87] और अल्लाह के हराम किये हुए हलाल कर लें

زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٣٧ يٰۤاَيُّهَا ع

उन के बुरे काम उन की आंखों में भले लगते हैं और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ

ईमान वालो तुम्हें क्या हुवा जब तुम से कहा जाए कि राहे ख़ुदा में कूच करो तो बोझ के मारे

اِلَى الْاَرْضِ ؕ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ

ज़मीन पर बैठ जाते हो[88] क्या तुम ने दुन्या की ज़िन्दगी आख़िरत के बदले पसन्द कर ली और जीती दुन्या (दुन्या की ज़िन्दगी)

व ज़ुल हिज्जा, मुहर्रम और एक जुदा रजब। अ़रब लोग ज़मानए जाहिलिय्यत में भी इन महीनों की ता'ज़ीम करते थे और इन में क़िताल हराम जानते थे, इस्लाम में इन महीनों की हुरमत व अ़ज़्मत और ज़ियादा की गई। **83 :** गुनाह व ना फ़रमानी से **84 :** उन की नुसरत व मदद फ़रमाएगा। **85 :** نَسِیْٓءُ लुग़त में वक़्त के मुअख़्ख़र करने को कहते हैं और यहां शहरे हराम की हुरमत का दूसरे महीने की तरफ़ हटा देना मुराद है। ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब अश्हुरे हुरुम (या'नी ज़ुल क़ा'दह व ज़ुल हिज्जा, मुहर्रम, रजब) की हुरमतो अ़ज़्मत के मो'तक़िद थे तो जब कभी लड़ाई के ज़माने में येह हुरमत वाले महीने आ जाते तो उन को बहुत शाक़ गुज़रते, इस लिये उन्हों ने येह किया कि एक महीने की हुरमत दूसरे की तरफ़ हटाने लगे, मुहर्रम की हुरमत सफ़र की तरफ़ हटा कर मुहर्रम में जंग जारी रखते और बजाए इस के सफ़र को माहे हराम बना लेते और जब इस से भी तहरीम हटाने की हाजत समझते तो इस में भी जंग हलाल कर लेते और रबीउ़ल अव्वल को माहे हराम क़रार देते, इस तरह तहरीम साल के तमाम महीनों में घूमती और उन के इस तर्ज़े अ़मल से माहहाए हराम की तख़्सीस ही बाक़ी न रही, इसी तरह हज को मुख़्तलिफ़ महीनों में घुमाते फिरते थे। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हज्जतुल वदाअ़ में ए'लान फ़रमाया कि نَسِیْٓءُ के महीने गए गुज़रे हुए, अब महीनों के अवक़ात की वज़्ए इलाही के मुताबिक़ हिफ़ाज़त की जाए और कोई महीना अपनी जगह से न हटाया जाए और इस आयत में نَسِیْٓءُ को मम्नूअ़ क़रार दिया गया और कुफ़्र पर कुफ़्र की ज़ियादती बताया गया क्यूं कि इस में माहहाए हराम में तहरीमे क़िताल को हलाल जानना और ख़ुदा के हराम किये हुए को हलाल कर लेना पाया जाता है। **86 :** या'नी माहे हराम को या इस हटाने को **87 :** या'नी माहे हराम चार ही रहें इस की तो पाबन्दी करते हैं और इन की तख़्सीस तोड़ कर हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त, जो महीना हराम था उसे हलाल कर लिया इस की जगह दूसरे को हराम क़रार दिया। **88 :** और सफ़र से घबराते हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ग़ज़्वए तबूक की तरग़ीब में नाज़िल हुई। तबूक एक मक़ाम है अतराफ़े शाम में मदीनए तय्यिबा से चौदह मन्ज़िल फ़ासिले पर। रजब 9 सि. हिजरी में ताइफ़ से वापसी के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़बर पहुंची कि अ़रब के नसरानियों की तहरीक से हरक़ुल शाहे रूम ने रूमियों और शामियों की फ़ौजे गिरां (कसीर फ़ौज) जम्अ़ की है और वोह मुसल्मानों पर हम्ले का इरादा रखता है तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुसल्मानों को जिहाद का हुक्म दिया। येह ज़माना निहायत तंगी क़हत

www.dawateislami.net

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا

का अस्बाब आख़िरत के सामने नहीं मगर थोड़ा[89] अगर न कूच करोगे तो[90] तुम्हें सख़्त

اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

सज़ा देगा और तुम्हारी जगह और लोग ले आएगा[91] और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे और **अल्लाह** सब कुछ

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कर सकता है अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक **अल्लाह** ने उन की मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुवा[92]

ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ

सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों[93] ग़ार में थे जब अपने यार से[94] फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक **अल्लाह**

مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ

हमारे साथ है तो **अल्लाह** ने उस पर अपना सकीना (इत़्मीनान) उतारा[95] और उन फ़ौजों से उस की मदद की जो तुम ने न देखीं[96] और काफ़िरों

साली और शिद्दते गरमी का था यहां तक कि दो दो आदमी एक एक खजूर पर बसर करते थे, सफ़र दूर का था दुश्मन कसीर और क़वी थे, इस लिये बा'ज़ क़बीले बैठ रहे और उन्हें इस वक़्त जिहाद में जाना गिरां मा'लूम हुवा और इस ग़ज़्वे में बहुत से मुनाफ़िक़ीन का पर्दा फ़ाश और ह़ाल ज़ाहिर हो गया। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ग़ज़्वे में बड़ी आ़ली हिम्मती से ख़र्च किया, दस हज़ार मुजाहिदीन को सामान दिया और दस हज़ार दीनार इस ग़ज़्वे पर ख़र्च किये नव सो ऊंट और सो घोड़े मअ़ साज़ो सामान के इस के इ़लावा हैं और अस्ह़ाब ने भी ख़ूब ख़र्च किया, इन में सब से पहले ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ हैं जिन्हों ने अपना कुल माल ह़ाज़िर कर दिया जिस की मिक़्दार चार हज़ार दिरहम थी और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपना निस्फ़ माल ह़ाज़िर किया और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم तीस हज़ार का लश्कर ले कर रवाना हुए। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा को मदीनए त़य्यिबा में छोड़ा अ़ब्दुल्लाह बिन उबय और उस के हमराही मुनाफ़िक़ीन सनिय्यतुल वदाअ़ तक चल कर रह गए, जब लश्करे इस्लाम तबूक में उतरा तो उन्हों ने देखा कि चश्मे में पानी बहुत थोड़ा है। रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उस के पानी से उस में कुल्ली फ़रमाई जिस की बरकत से पानी जोश में आया और चश्मा भर गया लश्कर और उस के तमाम जानवर अच्छी त़रह़ सैराब हुए, ह़ज़रत ने काफ़ी अ़र्सा यहां क़ियाम फ़रमाया। हिरक़्ल अपने दिल में आप को सच्चा नबी जानता था इस लिये उसे ख़ौफ़ हुवा और उस ने आप से मुक़ाबला न किया, ह़ज़रत ने अत़राफ़ में लश्कर भेजे चुनान्चे ह़ज़रते ख़ालिद को चार सो से ज़ाइद सुवारों के साथ उकैदिर ह़ाकिमे दूमतुल जन्दल के मुक़ाबिल भेजा और फ़रमाया कि तुम उस को नील गाय के शिकार में पकड़ लो। चुनान्चे ऐसा ही हुवा जब वोह नील गाय के शिकार के लिये अपने क़ल्ए़ से उतरा और ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उस को गिरिफ़्तार कर के ख़िदमते अक़्दस में लाए हु़ज़ूर ने जिज़्या मुक़र्रर फ़रमा कर उस को छोड़ दिया, इसी त़रह़ ह़ाकिमे ऐला पर इस्लाम पेश किया और जिज़्ये पर सुल्ह़ फ़रमाई। वापसी के वक़्त जब हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीने के क़रीब तशरीफ़ लाए तो जो लोग जिहाद में साथ होने से रह गए थे वोह ह़ाज़िर हुए हु़ज़ूर ने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि इन में से किसी से कलाम न करें और अपने पास न बिठाएं जब तक हम इजाज़त न दें तो मुसल्मानों ने उन से ए'राज़ किया यहां तक कि बाप और भाई की त़रफ़ भी इल्तिफ़ात न किया, इसी बाब में येह आयतें नाज़िल हुईं। **89 :** कि दुन्या और इस की तमाम मताअ़ फ़ानी है और आख़िरत और इस की तमाम ने'मतें बाक़ी हैं। **90 :** ऐ मुसल्मानो ! रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के ह़स्बे हुक्म **अल्लाह** तआ़ला **91 :** जो तुम से बेहतर और फ़रमां बरदार होंगे। मुराद येह है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की नुसरत और उन के दीन को इ़ज़्ज़त देने का ख़ुद कफ़ील है तो अगर तुम इत़ाअ़ते फ़रमाने रसूल में जल्दी करोगे तो येह सआ़दत तुम्हें नसीब होगी और अगर तुम ने सुस्ती की तो **अल्लाह** तआ़ला दूसरों को अपने नबी के शरफ़े ख़िदमत से सरफ़राज़ फ़रमाएगा। **92 :** या'नी वक़्ते हिजरत मक्कए मुकर्रमा से। जब कि कुफ़्फ़ार ने दारुन्नदवा में हु़ज़ूर के लिये क़त्ल व क़ैद वग़ैरा के बुरे बुरे मश्वरे किये थे। **93 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ। **94 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से। **मस्अला :** ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सह़ाबिय्यत इस आयत से साबित है। ह़सन बिन फ़ज़्ल ने फ़रमाया : जो शख़्स ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर की सह़ाबिय्यत का इन्कार करे वोह नस्से क़ुरआनी का मुन्किर हो कर काफ़िर हुवा। **95 :** और क़ल्ब को इत़्मीनान अ़त़ा फ़रमाया **96 :** इन से मुराद मलाएका की फ़ौजें हैं जिन्हों ने कुफ़्फ़ार के रुख़ फेर दिये और वोह आप को देख न सके और बद्र व अह़ज़ाब व हु़नैन में भी इन्हीं ग़ैबी फ़ौजों से मदद फ़रमाई।

www.dawateislami.net

كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَ كَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَ اللّٰهُ عَزِيْزٌ

की बात नीचे डाली[97] अल्लाह ही का बोल बाला है और अल्लाह ग़ालिब

حَكِيْمٌ ﴿۴۰﴾ اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّ ثِقَالًا وَّ جَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ فِيْ

हिक्मत वाला है कूच करो हलकी जान से चाहे भारी दिल से[98] और अल्लाह की राह में लड़ो अपने

سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ لَوْ كَانَ عَرَضًا

माल और जान से येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर जानो[99] अगर कोई क़रीब

قَرِيْبًا وَّ سَفَرًا قَاصِدًا لَّا تَّبَعُوْكَ وَ لٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَ

माल या मुतवस्सित् सफ़र होता[100] तो ज़रूर तुम्हारे साथ जाते[101] मगर उन पर तो मशक़्क़त का रास्ता दूर पड़ गया और

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَ

अब अल्लाह की क़सम खाएंगे[102] कि हम से बन पड़ता तो ज़रूर तुम्हारे साथ चलते[103] अपनी जानों को हलाक करते हैं[104] और

اللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۴۲﴾ ع عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى

अल्लाह जानता है कि वोह बेशक ज़रूर झूटे हैं अल्लाह तुम्हें मुआ़फ़ करे[105] तुम ने उन्हें क्यूं इज़्न (इजाज़त) दे दिया जब तक

يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَ تَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۴۳﴾ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ

न खुले थे तुम पर सच्चे और ज़ाहिर न हुए थे झूटे वोह जो अल्लाह और क़ियामत

97 : दा'वते कुफ़्रो शिर्क को पस्त फ़रमाया। **98 :** या'नी ख़ुशी से या गिरानी से। और एक क़ौल येह है कि क़ुव्वत के साथ या ज़ो'फ़ के साथ और बे सामानी से या सरो सामान से **99 :** कि जिहाद का सवाब बैठ रहने से बेहतर है तो मुस्तइद्दी (पूरी आमादगी) के साथ तय्यार हो और काहिली न करो। **100 :** और दुन्यवी नफ़्अ़ की उम्मीद होती और शदीद मेह़नतो मशक़्क़त का अन्देशा न होता **101 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन मुनाफ़िक़ीन की शान में नाज़िल हुई जिन्हों ने ग़ज़्वए तबूक में जाने से तख़ल्लुफ़ (पीछे बैठ जाना इख़्तियार) किया था। **102 :** येह मुनाफ़िक़ीन, और इस त़रह़ मा'ज़िरत करेंगे **103 :** मुनाफ़िक़ीन की इस मा'ज़िरत से पहले ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बर और दलाइले नुबुव्वत में से है। चुनान्चे जैसा फ़रमाया था वैसा ही पेश आया और उन्हों ने येही मा'ज़िरत की और झूटी क़समें खाईं। **104 :** झूटी क़सम खा कर। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि झूटी क़समें खाना सबबे हलाकत है। **105 :** "عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ" से इब्तिदाए कलाम व इफ़्तिताहे ख़िता़ब, मुख़ात़ब की ता'ज़ीमो तौक़ीर में मुबालग़े के लिये है और ज़बाने अ़रब में येह उ़र्फ़ शाएअ़ है कि मुख़ात़ब की ता'ज़ीम के मौक़अ़ पर ऐसे कलिमे इस्ति'माल किये जाते हैं। क़ाज़ी इयाज़ رضی اللہ عنہ ने (अपनी किताब) शिफ़ा में फ़रमाया : जिस किसी ने इस सुवाल को इताब क़रार दिया उस ने ग़लती की क्यूं कि ग़ज़्वए तबूक में ह़ाज़िर न होने और घर रह जाने की इजाज़त मांगने वालों को इजाज़त देना न देना दोनों ह़ज़रत के इख़्तियार में थे और आप इस में मुख़्तार थे। चुनान्चे अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : "فَأْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ" आप इन में से जिसे चाहें इजाज़त दीजिये तो "لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ" फ़रमाना इताब के लिये नहीं है बल्कि येह इज़्हार है कि अगर आप इन्हें इजाज़त न देते तो भी वोह जिहाद में जाने वाले न थे और "عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ" के मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें मुआ़फ़ करे, गुनाह से तो तुम्हें वासित़ा ही नहीं, इस में सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की कमाले तकरीमो तौक़ीर और तस्कीनो तसल्ली है कि क़ल्बे मुबारक पर "لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ" फ़रमाने से कोई बार न हो।

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ؕ وَ

पर ईमान रखते हैं तुम से छुट्टी न मांगेंगे इस से कि अपने माल और जान से जिहाद करें और

اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۴﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह ख़ूब जानता है परहेज़ गारों को तुम से येह छुट्टी वोही मांगते हैं जो **अल्लाह**

وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ ارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ لَوْ

और क़ियामत पर ईमान नहीं रखते[106] और उन के दिल शक में पड़े हैं तो वोह अपने शक में डांवांडोल हैं[107] उन्हें

اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّ لٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ

निकलना मन्ज़ूर होता[108] तो इस का सामान करते मगर ख़ुदा ही को उन का उठना ना पसन्द हुवा तो उन में काहिली भर दी

وَ قِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿۴۶﴾ لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا

और[109] फ़रमाया गया कि बैठ रहो बैठ रहने वालों के साथ[110] अगर वोह तुम में निकलते तो उन से सिवा नुक़्सान के तुम्हें कुछ न बढ़ता

وَّ لَا۠اَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَ فِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ

और तुम में फ़ितना डालने को तुम्हारे बीच में ग़ुराबें दौड़ाते (फ़साद फैलाते)[111] और तुम में उन के जासूस मौजूद हैं[112] और **अल्लाह**

عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۷﴾ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَ قَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ

ख़ूब जानता है ज़ालिमों को बेशक उन्हों ने पहले ही फ़ितना चाहा था[113] और ऐ महबूब तुम्हारे लिये तदबीरें उलटी पलटीं[114]

حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَ ظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ هُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ

यहां तक कि हक़ आया[115] और **अल्लाह** का हुक्म ज़ाहिर हुवा[116] और उन्हें ना गवार था और उन में कोई तुम से यूं अ़र्ज़ करता है

ائْذَنْ لِّيْ وَ لَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ

कि मुझे रुख़्सत दीजिये और फ़ितने में न डालिये[117] सुन लो वोह फ़ितने ही में पड़े[118] और बेशक जहन्नम घेरे हुए है

106 : या'नी मुनाफ़िक़ीन **107 :** न इधर के हुए न उधर के हुए न कुफ़्फ़ार के साथ रह सके न मोमिनीन का साथ दे सके। **108 :** और जिहाद का इरादा रखते **109 :** उन के इजाज़त चाहने पर **110 :** बैठ रहने वालों से औ़रतें बच्चे बीमार और अपाहज लोग मुराद हैं। **111 :** और झूटी झूटी बातें बना कर फ़साद अंगेज़ियां करते। **112 :** जो तुम्हारी बातें उन तक पहुंचाएं। **113 :** और वोह आप के अस्हाब को दीन से रोकने की कोशिश करते जैसा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ ने रोज़े उहुद किया कि मुसल्मानों को इग़्वा करने के लिये अपनी जमाअ़त ले कर वापस हुवा। **114 :** और उन्हों ने तुम्हारा काम बिगाड़ने और दीन में फ़साद डालने के लिये बहुत मक्रो ह़ीले किये **115 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ताईद व नुसरत। **116 :** और उस का दीन ग़ालिब हुवा। **117 शाने नुज़ूल :** येह आयत जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए तबूक के लिये तय्यारी फ़रमाई तो जद बिन क़ैस ने कहा : **या रसूलल्लाह**! मेरी क़ौम जानती है कि मैं औ़रतों का बड़ा शैदाई हूं मुझे अन्देशा है कि मैं रूमी औ़रतों को देखूंगा तो मुझ से सब्र न हो सकेगा इस लिये आप मुझे यहीं ठहर जाने की इजाज़त दीजिये और उन औ़रतों के फ़ितने में न डालिये मैं आप की

www.dawateislami.net

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَ اِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ

काफ़िरों को अगर तुम्हें भलाई पहुंचे[119] तो उन्हें बुरा लगे और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे[120]

يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَاۤ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَ يَتَوَلَّوْا وَّ هُمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾ قُلْ

तो कहें[121] हम ने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और खुशियां मनाते फिर जाएं तुम फ़रमाओ

لَّنْ يُّصِيْبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

हमें न पहुंचेगा मगर जो **अल्लाह** ने हमारे लिये लिख दिया वोह हमारा मौला है और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَ

पर भरोसा चाहिये तुम फ़रमाओ तुम हम पर किस चीज़ का इन्तिज़ार करते हो मगर दो खूबियों में से एक का[122] और

نَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖۤ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ

हम तुम पर इस इन्तिज़ार में हैं कि **अल्लाह** तुम पर अज़ाब डाले अपने पास से[123] या हमारे हाथों[124]

فَتَرَبَّصُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾ قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ

तो अब राह देखो (इन्तिज़ार करो) हम भी तुम्हारे साथ राह देख रहे हैं[125] तुम फ़रमाओ कि दिल से ख़र्च करो या ना गवारी से तुम से हरगिज़

يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَ مَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ

क़बूल न होगा[126] बेशक तुम बे हुक्म (ना फ़रमान) लोग हो और वोह जो ख़र्च करते हैं

مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ بِرَسُوْلِهٖ وَ لَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ

उस का क़बूल होना बन्द न हुवा मगर इसी लिये कि वोह **अल्लाह** व रसूल से मुन्किर हुए और नमाज़ को नहीं आते

अपने माल से मदद करूंगा। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما फ़रमाते हैं कि येह उस का हीला था और इस में सिवाए निफ़ाक़ के और कोई इल्लत न थी। रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने उस की त़रफ़ से मुंह फेर लिया और उसे इजाज़त दे दी, उस के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई **118 :** क्यूं कि जिहाद से रुक रहना और रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم के हुक्म की मुख़ालफ़त करना बहुत बड़ा फ़ितना है। **119 :** और तुम दुश्मन पर फ़त्ह़ याब हो और ग़नीमत तुम्हारे हाथ आए **120 :** और किसी त़रह़ की शिद्दत पेश आए **121 :** मुनाफ़िक़ीन कि चालाकी से जिहाद में न जा कर **122 :** या तो फ़त्ह़ व ग़नीमत मिलेगी या शहादत व मग़्फ़िरत। क्यूं कि मुसल्मान जब जिहाद में जाता है तो वोह अगर ग़ालिब हो जब तो फ़त्ह़ व ग़नीमत और अज्रे अ़ज़ीम पाता है और अगर राहे ख़ुदा में मारा जाए तो उस को शहादत ह़ासिल होती है जो उस की आ'ला मुराद है। **123 :** और तुम्हें आ़द व समूद वग़ैरा की त़रह़ हलाक करे **124 :** तुम को क़त्ल व असीरी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार करे **125 :** कि तुम्हारा क्या अन्जाम होता है। **126 शाने नुज़ूल :** येह आयत जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ के जवाब में नाज़िल हुई जिस ने जिहाद में न जाने की इजाज़त त़लब करने के साथ येह कहा था कि मैं अपने माल से मदद करूंगा। इस पर ह़ज़रते ह़क़ तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم से फ़रमाया (ऐ मह़बूब आप फ़रमा दीजिये) कि तुम ख़ुशी से दो या नाख़ुशी से तुम्हारा माल क़बूल न किया जाएगा या'नी रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم उस को न लेंगे क्यूं कि येह देना **अल्लाह** के लिये नहीं है।

www.dawateislami.net

اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ

मगर जी हारे (सुस्ती की हालत में) और ख़र्च नहीं करते मगर ना गवारी से[127] तो तुम्हें उन के माल और उन की

وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ

औलाद का तअ़ज्जुब न आए **अल्लाह** येही चाहता है कि दुन्या की ज़िन्दगी में इन चीज़ों से उन पर वबाल डाले और

تَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَ

कुफ़्र ही पर उन का दम निकल जाए[128] और **अल्लाह** की क़समें खाते हैं[129] कि वोह तुम में से हैं[130] और

مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ

तुम में से हैं नहीं[131] हां वोह लोग डरते हैं[132] अगर पाएं कोई पनाह या ग़ार

اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى

या समा जाने की जगह तो रस्सियां तुड़ाते (पूरी कोशिश करते) उधर फिर जाएंगे[133] और उन में कोई वोह है कि सदक़े बांटने

الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ

में तुम पर ता'न करता है[134] तो अगर उन[135] में से कुछ मिले तो राज़ी हो जाएं और न मिले तो जभी

يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا

वोह नाराज़ हैं और क्या अच्छा होता अगर वोह उस पर राज़ी होते जो **अल्लाह** व रसूल ने उन को दिया और कहते हमें **अल्लाह**

اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾ ع اِنَّمَا

काफ़ी है अब देता है हमें **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से और **अल्लाह** का रसूल हमें **अल्लाह** ही की त़रफ़ रग़्बत है[136] ज़कात

127 : क्यूं कि उन्हें रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं। 128 : तो वोह माल उन के ह़क़ में सबबे राह़त न हुवा बल्कि वबाल हुवा। 129 : मुनाफ़िक़ीन इस पर 130 : या'नी तुम्हारे दीनो मिल्लत पर हैं, मुसल्मान हैं। 131 : तुम्हें धोका देते और झूट बोलते हैं। 132 : कि अगर उन का निफ़ाक़ ज़ाहिर हो जाए तो मुसल्मान उन के साथ वोही मुआ़मला करेंगे जो मुश्रिकीन के साथ करते हैं, इस लिये वोह बराहे तक़य्या अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते हैं। 133 : क्यूं कि उन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم और मुसल्मानों से इन्तिहा दरजे का बुग़्ज़ है। 134 **शाने नुज़ूल :** येह आयत जुल ख़ुवैसिरा तमीमी के ह़क़ में नाज़िल हुई। इस शख़्स का नाम हुरक़ूस बिन ज़ुहैर है और येही ख़वारिज की अस्ल व बुन्याद है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे तो जुल ख़ुवैसिरा ने कहा : **या रसूलल्लाह!** अ़द्ल कीजिये। हुज़ूर ने फ़रमाया : तुझे ख़राबी हो, मैं न अ़द्ल करूंगा तो अ़द्ल कौन करेगा? ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : मुझे इजाज़त दीजिये कि इस मुनाफ़िक़ की गरदन मार दूं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि इसे छोड़ दो, इस के और भी हमराही हैं कि तुम उन की नमाज़ों के सामने अपनी नमाज़ों को और उन के रोज़ों के सामने अपने रोज़ों को ह़क़ीर देखोगे, वोह क़ुरआन पढ़ेंगे और उन के गलों से न उतरेगा, वोह दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से। 135 : सदक़ात 136 : कि हम पर अपना फ़ज़्ल वसीअ़ करे और हमें ख़ल्क़ के अम्वाल से ग़नी और बे नियाज़ कर दे।

www.dawateislami.net

الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ الْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَ الْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ

तो इन्हीं लोगों के लिये है[137] मोहताज और निरे नादार और जो इसे तह्सील (वुसूल) कर के लाएं और जिन के दिलों को इस्लाम से उल्फ़त दी जाए

وَ فِي الرِّقَابِ وَ الْغٰرِمِيْنَ وَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ

और गरदनें छुड़ाने में और क़र्ज़दारों को और **अल्लाह** की राह में और मुसाफ़िर को यह ठहराया हुवा है

اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۶۰﴾ وَ مِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَ يَقُوْلُوْنَ

अल्लाह का और **अल्लाह** इल्मो हिक्मत वाला है और उन में कोई वोह हैं कि इन ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) को सताते हैं[138] और कहते हैं

هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ يُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ

वोह तो कान हैं तुम फ़रमाओ तुम्हारे भले के लिये कान हैं **अल्लाह** पर ईमान लाते हैं और मुसल्मानों की बात पर यक़ीन करते हैं[139] और

رَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ

जो तुम में मुसल्मान हैं उन के वासिते रहमत हैं और वोह जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उन के लिये

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۶۱﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ

दर्दनाक अ़ज़ाब है तुम्हारे सामने **अल्लाह** की क़सम खाते हैं[140] कि तुम्हें राज़ी कर लें[141] और **अल्लाह** व रसूल का हक़ ज़ाइद था

137 : जब मुनाफ़िक़ीन ने तक़्सीमे सदक़ात में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ता'न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस आयत में बयान फ़रमा दिया कि सदक़ात के मुस्तहिक़ सिर्फ़ येही आठ क़िस्म के लोग हैं इन्हीं पर सदक़ात सर्फ़ किये जाएंगे इन के सिवा और कोई मुस्तहिक़ नहीं और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को अम्वाले सदक़ा से कोई वासिता ही नहीं आप पर और आप की औलाद पर सदक़ात हराम हैं तो ता'न करने वालों को ए'तिराज़ का क्या मौक़अ़ ? **सदक़े** से इस आयत में ज़कात मुराद है। **मस्अला :** ज़कात के मुस्तहिक़ आठ क़िस्म के लोग क़रार दिये गए हैं उन में से मुअल्लिफ़तुल क़ुलूब ब इज्माए सहाबा साक़ित हो गए क्यूं कि जब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इस्लाम को ग़लबा दिया तो अब इस की हाजत न रही, येह इज्माअ़ ज़मानए सिद्दीक़ में मुन्अ़क़िद हुवा। **मस्अला : फ़क़ीर** वोह है जिस के पास अदना चीज़ हो और जब तक उस के पास एक वक़्त के लिये कुछ हो उस को सुवाल हलाल नहीं। **मिस्कीन** वोह है जिस के पास कुछ न हो, वोह सुवाल कर सकता है। **आमिलीन** वोह लोग हैं जिन को इमाम ने सदक़े तह्सील करने पर मुक़र्रर किया हो, उन्हें इमाम इतना दे जो उन के और उन के मुतअ़ल्लिक़ीन के लिये काफ़ी हो। **मस्अला :** अगर आ़मिल ग़नी हो तो भी उस को लेना जाइज़ है। **मस्अला :** आ़मिल सय्यिद या हाशिमी हो तो वोह ज़कात में से न ले। **गरदनें छुड़ाने** से मुराद येह है कि जिन ग़ुलामों को उन के मालिकों ने मुकातब कर दिया हो और एक मिक़्दार माल की मुक़र्रर कर दी हो कि इस क़दर वोह अदा कर दें तो आज़ाद हैं वोह भी मुस्तहिक़ हैं उन को आज़ाद कराने के लिये माले ज़कात दिया जाए। **क़र्ज़दार** जो बिग़ैर किसी गुनाह के मुब्तलाए क़र्ज़ हुए हों और इतना माल न रखते हों जिस से क़र्ज़ अदा करें उन्हें अदाए क़र्ज़ में माले ज़कात से मदद दी जाए। **अल्लाह की राह** में ख़र्च करने से बे सामान मुजाहिदीन और नादार हाजियों पर सर्फ़ करना मुराद है। **इब्ने सबील** से वोह मुसाफ़िर मुराद है जिस के पास माल न हो। **मस्अला :** ज़कात देने वाले को येह भी जाइज़ है कि वोह इन तमाम अक़्साम के लोगों को ज़कात दे और येह भी जाइज़ है कि इन में से किसी एक ही क़िस्म को दे। **मस्अला :** ज़कात इन्हीं लोगों के साथ ख़ास की गई तो इन के इलावा और दूसरे मसरफ़ में ख़र्च न की जाएगी न मस्जिद की ता'मीर में न मुर्दे के कफ़न में न उस के क़र्ज़ की अदा में। **मस्अला :** ज़कात बनी हाशिम और ग़नी और उन के ग़ुलामों को न दी जाए और न आदमी अपनी बीबी और औलाद और ग़ुलामों को दे। (تفسیر احمدی و مدارک) **138 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को। **शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन अपने जल्सों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में ना शाइस्ता बातें बका करते थे, उन में से बा'ज़ों ने कहा कि अगर हुज़ूर को ख़बर हो गई तो हमारे हक़ में अच्छा न होगा। जुलास बिन सुवैद मुनाफ़िक़ ने कहा : हम जो चाहें कहें, हुज़ूर के सामने मुकर जाएंगे और क़सम खा लेंगे वोह तो कान हैं उन से जो कह दिया जाए सुन कर मान लेते हैं। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और येह फ़रमाया कि अगर वोह सुनने वाले भी हैं तो ख़ैर और सलाह के सुनने और मानने वाले हैं शर और फ़साद के नहीं। **139 :** न मुनाफ़िक़ों की बात पर। **140 :** मुनाफ़िक़ीन, इस लिये **141 शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन अपनी मजलिसों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ता'न किया करते थे और मुसल्मानों के पास आ कर उस से मुकर जाते थे

www.dawateislami.net

اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ

कि उसे राज़ी करते अगर ईमान रखते थे क्या उन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे अल्लाह

وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾

और उस के रसूल का तो उस के लिये जहन्नम की आग है कि हमेशा उस में रहेगा यही बड़ी रुस्वाई है

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ

मुनाफ़िक़ डरते हैं कि उन[142] पर कोई सूरत ऐसी उतरे जो उन[143] के दिलों की छुपी[144] जता दे

قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ

तुम फ़रमाओ हंसे जाओ अल्लाह को ज़रूर ज़ाहिर करना है जिस का तुम्हें डर है और ऐ महबूब अगर तुम उन से पूछो

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ

तो कहेंगे कि हम तो यूंही हंसी खेल में थे[145] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह और उस की आयतों और उस के रसूल

كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ

से हंसते हो बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसल्मान हो कर[146] अगर

نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ ع

हम तुम में से किसी को मुआफ़ करें[147] तो औरों को अज़ाब देंगे इस लिये कि वोह मुजरिम थे[148]

और क़समें खा खा कर अपनी बरिय्यत (बे गुनाही) साबित करते थे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि मुसल्मानों को राज़ी करने के लिये क़समें खाने से ज़ियादा अहम अल्लाह और उस के रसूल को राज़ी करना था अगर ईमान रखते थे तो ऐसी ह़रकतें क्यूं कीं जो ख़ुदा और रसूल की नाराज़ी का सबब हों। **142 :** मुसल्मानों **143 :** मुनाफ़िक़ों **144 :** दिलों की छुपी चीज़ उन का निफ़ाक़ है और वोह बुग़्ज़ो अ़दावत जो वोह मुसल्मानों के साथ रखते थे और उस को छुपाया करते थे। सय्यिदे आ़लम ﷺ के मो'जिज़ात देखने और आप की ग़ैबी ख़बरें सुनने और उन को वाक़ेअ़ के मुताबिक़ पाने के बा'द मुनाफ़िक़ों को अन्देशा हो गया कि कहीं अल्लाह तआ़ला कोई ऐसी सूरत नाज़िल न फ़रमाए जिस से उन के असरार ज़ाहिर कर दिये जाएं और उन की रुस्वाई हो। इस आयत में इसी का बयान है। **145 शाने नुज़ूल :** ग़ज़्वए तबूक में जाते हुए मुनाफ़िक़ीन के तीन नफ़रों में से दो रसूले करीम ﷺ की निस्बत तमस्ख़ुरन कहते थे कि इन का ख़याल है कि येह रूम पर ग़ालिब आ जाएंगे कितना बईद ख़याल है और एक नफ़र बोलता तो न था मगर इन बातों को सुन कर हंसता था। ह़ुज़ूर ने उन को त़लब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि तुम ऐसा ऐसा कह रहे थे ? उन्हों ने कहा : हम रास्ता काटने के लिये हंसी खेल के त़ौर पर दिललगी की बातें कर रहे थे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन का येह उ़ज़्र व ह़ीला क़बूल न किया गया और उन के लिये येह फ़रमाया गया जो आगे इर्शाद होता है : **146 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि रसूले करीम ﷺ की शान में गुस्ताख़ी कुफ़्र है जिस त़रह भी हो उस में उ़ज़्र क़बूल नहीं। **147 :** उस के ताइब होने और ब इख़्लास ईमान लाने से। मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ का क़ौल है कि इस से वोही शख़्स मुराद है जो हंसता था मगर उस ने अपनी ज़बान से कोई कलिमए गुस्ताख़ी न कहा था जब येह आयत नाज़िल हुई तो वोह ताइब हुवा और इख़्लास के साथ ईमान लाया और उस ने दुआ़ की, कि या रब ! मुझे अपनी राह में मक़्तूल कर के ऐसी मौत दे कि कोई येह कहने वाला न हो कि मैं ने ग़ुस्ल दिया मैं ने कफ़न दिया मैं ने दफ़्न किया, चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि वोह जंगे यमामा में शहीद हुए और उन का पता ही न चला। उन का नाम यह़्या बिन ह़ुमैर अश्जई था और चूंकि उन्हों ने ह़ुज़ूर की बदगोई से ज़बान रोकी थी इस लिये उन्हें तौबा व ईमान की तौफ़ीक़ मिली। **148 :** और अपने जुर्म पर क़ाइम रहे और ताइब न हुए।

www.dawateislami.net

وقف لازم

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَ

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें एक थेली के चट्टे बट्टे (एक जैसे) हैं[149] बुराई का हुक्म दें[150] और

يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ

भलाई से मन्अ़ करें[151] और अपनी मुठ्ठी बन्द रखें (ख़र्च न करें)[152] वोह **अल्लाह** को छोड़ बैठे[153] तो **अल्लाह** ने उन्हें छोड़ दिया[154] बेशक

الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ

मुनाफ़िक़ वोही पक्के बे हुक्म (ना फ़रमान) हैं **अल्लाह** ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और काफ़िरों को

نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

जहन्नम की आग का वा'दा दिया है जिस में हमेशा रहेंगे वोह उन्हें बस (काफ़ी) है और **अल्लाह** की उन पर ला'नत है और उन के लिये क़ाइम रहने वाला

مُّقِيْمٌ ﴿۶۸﴾ كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا

अ़ज़ाब है जैसे वोह जो तुम से पहले थे तुम से ज़ोर में बढ़ कर थे और उन के माल और औलाद

وَّاَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ

तुम से ज़ियादा तो वोह अपना हि़स्सा[155] बरत (फ़ाएदा उठा) गए तो तुम ने अपना हि़स्सा बरता जैसे

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ

अगले अपना हि़स्सा बरत गए और तुम बेहूदगी में पड़े जैसे वोह पड़े थे[156] उन के अ़मल

اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۶۹﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ

अकारत (ज़ाएअ़) गए दुन्या और आख़िरत में और वोही लोग घाटे में हैं[157] क्या उन्हें[158] अपने

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۬ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَاَصْحٰبِ

से अगलों की ख़बर न आई[159] नूह़ की क़ौम[160] और आ़द[161] और समूद[162] और इब्राहीम की क़ौम[163] और मद्यन

149 : वोह सब निफ़ाक़ और आ'माले ख़बीसा में यक्सां हैं। उन का ह़ाल येह है कि **150 :** या'नी कुफ़्रो मा'सियत और रसूल ﷺ की तक्ज़ीब का। (خازن) **151 :** या'नी ईमान व त़ाअ़त व तस्दीक़े रसूल से **152 :** राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से **153 :** और उन्हों ने उस की इत़ाअ़त व रिज़ा त़लबी न की। **154 :** और सवाब व फ़ज़्ल से मह़रूम कर दिया। **155 :** लज़्ज़ात व शहवाते दुन्यविय्या का **156 :** और तुम ने इत्तिबाए बात़िल और तक्ज़ीबे ख़ुदा व रसूल और मोमिनीन के साथ इस्तिह्ज़ा (ठठ्ठा मज़ाक़) करने में उन की राह इख़्तियार की। **157 :** उन्हीं कुफ़्फ़ार की त़रह़ ऐ मुनाफ़िक़ीन ! तुम टोटे में हो और तुम्हारे अ़मल बात़िल हैं। **158 :** या'नी मुनाफ़िक़ों को। **159 :** गुज़री हुई उम्मतों का ह़ाल मा'लूम न हुवा कि हम ने उन्हें अपने हुक्म की मुख़ालफ़त और अपने रसूलों की ना फ़रमानी करने पर किस त़रह़ हलाक किया। **160 :** जो तूफ़ान से हलाक की गई। **161 :** जो हवा से हलाक किये गए। **162 :** जो ज़ल्ज़ले से हलाक किये गए। **163 :** जो सल्बे ने'मत से हलाक की गई और नमरूद मच्छर से हलाक किया गया।

www.dawateislami.net

مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ

वाले[164] और वोह बस्तियां कि उलट दी गईं[165] उन के रसूल रोशन दलीलें उन के पास लाए थे[166] तो अल्लाह की शान न थी

لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ

कि उन पर ज़ुल्म करता[167] बल्कि वोह ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ालिम थे[168] और मुसल्मान मर्द और मुसल्मान औ़रतें

بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وقف لازم

एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं[169] भलाई का हुक्म दें[170] और बुराई से मन्अ़ करें

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानें

اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ

येह हैं जिन पर अ़न्क़रीब अल्लाह रह़्म करेगा बेशक अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मत वाला है अल्लाह ने मुसल्मान मर्दों

وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ

और मुसल्मान औ़रतों को बाग़ों का वा'दा दिया है जिन के नीचे नहरें रवां उन में हमेशा रहेंगे और पाकीज़ा

طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

मकानों का[171] बसने के बाग़ों में और अल्लाह की रिज़ा सब से बड़ी[172] येही है बड़ी

الْعَظِيْمُ ﴿۷۲﴾ ع يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَ ع ٩ ١٥

मुराद पानी ऐ ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर[173] और उन पर सख़्ती करो और

مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۷۳﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ

उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरी जगह पलटने की अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्हों ने न कहा[174] और बेशक

164 : या'नी ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम जो रोज़े अब्र (ग़ैबी आग) के अ़ज़ाब से हलाक की गई। **165 :** और ज़ेरो ज़बर कर डाली गईं वोह क़ौमे लूत़ की बस्तियां थीं अल्लाह तआ़ला ने इन छ[6] का ज़िक्र फ़रमाया इस लिये कि बिलादे शाम व इराक़ व यमन जो सर ज़मीने अ़रब के बिल्कुल क़रीब हैं इन में उन हलाक शुदा क़ौमों के निशान बाक़ी हैं और अ़रब लोग इन मक़ामात पर अक्सर गुज़रते रहते हैं। **166 :** उन लोगों ने बजाए तस्दीक़ करने के अपने रसूलों की तक्ज़ीब की जैसा कि ऐ मुनाफ़िक़ीन, कुफ़्फ़ार ! तुम कर रहे हो, डरो कि उन्हीं की त़रह़ मुब्तलाए अ़ज़ाब न किये जाओ। **167 :** क्यूं कि वोह ह़कीम है बिग़ैर जुर्म के सज़ा नहीं फ़रमाता। **168 :** कि कुफ़्र और तक्ज़ीबे अम्बिया कर के अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ बने। **169 :** और बाहम दीनी मह़ब्बत व मुवालात (दोस्ताना तअ़ल्लुक़ात) रखते हैं और एक दूसरे के मुईनो मददगार हैं। **170 :** या'नी अल्लाह और रसूल पर ईमान लाने और शरीअ़त का इत्तिबाअ़ करने का। **171 :** ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि जन्नत में मोती और याक़ूते सुर्ख़ और ज़बर जद के मह़ल मोमिनीन को अ़त़ा होंगे। **172 :** और तमाम ने'मतों से आ'ला और आ़शिक़ाने इलाही की सब से बड़ी तमन्ना। رَزَقَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى بِجَاهِ حَبِيْبِهٖ صلی اللّٰہ علیہ وسلم । **173 :** काफ़िरों पर तो तलवार और ह़र्ब से और मुनाफ़िक़ों पर इक़ामते हुज्जत से। **174 शाने नुज़ूल :** इमाम बग़वी ने कलबी से नक़्ल किया कि येह आयत

www.dawateislami.net

قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا

ज़रूर उन्हों ने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आ कर काफ़िर हो गए और वोह चाहा था जो उन्हें न मिला[175] और उन्हें

نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ

क्या बुरा लगा येही ना कि **अल्लाह** व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया[176] तो अगर वोह तौबा करें

خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ

तो उन का भला है और अगर मुंह फेरें[177] तो **अल्लाह** उन्हें सख़्त अ़ज़ाब करेगा दुन्या और आख़िरत में

وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۷۴﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ

और ज़मीन में कोई न उन का हिमायती होगा न मददगार[178] और उन में कोई वोह हैं जिन्हों ने **अल्लाह** से अ़हद किया था

لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّآ

कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे[179] तो जब

जुलास बिन सुवैद के हक़ में नाज़िल हुई। वाक़िआ़ येह था कि एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तबूक में ख़ुत्बा फ़रमाया उस में मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र किया और उन की बदहाली व बद मआली का ज़िक्र फ़रमाया। येह सुन कर जुलास ने कहा कि अगर मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) सच्चे हैं तो हम लोग गधों से बदतर। जब हुज़ूर मदीने वापस तशरीफ़ लाए तो आ़मिर बिन क़ैस ने हुज़ूर से जुलास का मक़ूला बयान किया, जुलास ने इन्कार किया और कहा कि **या रसूलल्लाह !** आ़मिर ने मुझ पर झूट बोला। हुज़ूर ने दोनों को हुक्म फ़रमाया कि मिम्बर के पास क़सम खाएं। जुलास ने बा'दे अ़स्र मिम्बर के पास खड़े हो कर **अल्लाह** की क़सम खाई कि येह बात इस ने नहीं कही और आ़मिर ने इस पर झूट बोला। फिर आ़मिर ने खड़े हो कर क़सम खाई कि बेशक येह मक़ूला जुलास ने कहा और मैं ने इस पर झूट नहीं बोला। फिर आ़मिर ने हाथ उठा कर **अल्लाह** के हुज़ूर में दुआ़ की : या रब ! अपने नबी पर सच्चे की तस्दीक़ नाज़िल फ़रमा। उन दोनों के जुदा होने से पहले ही हज़रते जिब्रील येह आयत ले कर नाज़िल हुए आयत में "فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ" सुन कर जुलास खड़े हो गए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** सुनिये **अल्लाह** ने मुझे तौबा का मौक़अ़ दिया, आ़मिर बिन क़ैस ने जो कुछ कहा सच कहा, मैं ने वोह कलिमा कहा था और अब मैं तौबा व इस्तिग़फ़ार करता हूं। हुज़ूर ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई और वोह तौबा पर साबित रहे। **175 :** मुजाहिद ने कहा कि जुलास ने इफ़्शाए राज़ (भेद खुल जाने) के अन्देशे से आ़मिर के क़त्ल का इरादा किया था, इस की निस्बत **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि वोह पूरा न हुवा। **176 :** ऐसी हालत में उन पर शुक्र वाजिब था न कि ना सिपासी (ना शुक्री)। **177 :** तौबा व ईमान से। और कुफ़्र व निफ़ाक़ पर मुसिर रहें। **178 :** कि उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके। **179 शाने नुज़ूल :** सा'लबा बिन हातिब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की, कि इस के लिये मालदार होने की दुआ़ फ़रमाएं। हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ सा'लबा थोड़ा माल जिस का तू शुक्र अदा करे उस बहुत से बेहतर है जिस का शुक्र अदा न कर सके। दोबारा फिर सा'लबा ने हाज़िर हो कर येही दरख़्वास्त की और कहा : उसी की क़सम ! जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर भेजा कि अगर वोह मुझे माल देगा तो मैं हर हक़ वाले का हक़ अदा करूंगा। हुज़ूर ने दुआ़ फ़रमाई **अल्लाह** तआ़ला ने उस की बकरियों में बरकत फ़रमाई और इतनी बढ़ीं कि मदीने में उन की गुन्जाइश न हुई तो सा'लबा उन को ले कर जंगल में चला गया और जुमुआ़ व जमाअ़त की हाज़िरी से भी महरूम हो गया। हुज़ूर ने उस का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया तो सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि उस का माल बहुत कसीर हो गया है और अब जंगल में भी उस के माल की गुन्जाइश न रही। हुज़ूर ने फ़रमाया कि सा'लबा पर अफ़्सोस ! फिर जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़कात के तहसील (हासिल) करने वाले भेजे लोगों ने उन्हें अपने अपने सदक़ात दिये जब सा'लबा से जा कर उन्हों ने सदक़ा मांगा उस ने कहा येह तो टेक्स हो गया, जाओ मैं सोच लूं। जब येह लोग रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में वापस आए तो हुज़ूर ने उन के कुछ अ़र्ज़ करने से क़ब्ल दो मरतबा फ़रमाया : सा'लबा पर अफ़्सोस ! तो येह आयत नाज़िल हुई। फिर सा'लबा सदक़ा ले कर हाज़िर हुवा तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे इस के क़बूल फ़रमाने की मुमानअ़त फ़रमा दी, वोह अपने सर पर ख़ाक डाल कर वापस हुवा, फिर उस सदक़े को ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में हज़रते अबू बक्र رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास लाया। उन्हों ने भी उसे क़बूल न फ़रमाया। फिर ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में हज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास लाया, उन्हों ने भी क़बूल न फ़रमाया और ख़िलाफ़ते उ़स्मानी में येह शख़्स हलाक हो गया। (مدارک)

[आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की तह़क़ीक़ के मुताबिक़ इस मुनाफ़िक़ का दुरुस्त नाम "सा'लबा इब्ने अबी हातिब" था। फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 453। इल्मिय्या]

www.dawateislami.net

اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَ تَوَلَّوْا وَّ هُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَاَعْقَبَهُمْ

अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया उस में बुख़्ल करने लगे और मुंह फेर कर पलट गए तो उस के पीछे

نِفَاقًا فِیْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى یَوْمِ یَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَ بِمَا

अल्लाह ने उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उस से मिलेंगे बदला इस का कि उन्हों ने अल्लाह से वा'दा झूटा किया और बदला इस

كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ ﴿۷۷﴾ اَلَمْ یَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَ نَجْوٰىهُمْ وَ

का कि झूट बोलते थे[180] क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उन के दिल की छुपी और उन की सरगोशी को जानता है और

اَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ ﴿۷۸﴾ اَلَّذِیْنَ یَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِیْنَ مِنَ

येह कि अल्लाह सब ग़ैबों का बहुत जानने वाला है[181] वोह जो ऐब लगाते हैं उन मुसल्मानों को

الْمُؤْمِنِیْنَ فِی الصَّدَقٰتِ وَ الَّذِیْنَ لَا یَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ

कि दिल से ख़ैरात करते हैं[182] और उन को जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत से[183]

فَیَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۷۹﴾ اِسْتَغْفِرْ

तो उन से हंसते हैं[184] अल्लाह उन की हंसी की सज़ा देगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है तुम उन की मुआ़फ़ी

لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِیْنَ مَرَّةً فَلَنْ یَّغْفِرَ اللّٰهُ

चाहो या न चाहो अगर तुम सत्तर बार उन की मुआ़फ़ी चाहोगे तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें नहीं

180 : इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित होता है कि अ़हद शिकनी और वा'दा ख़िलाफ़ी से निफ़ाक़ पैदा होता है तो मुसल्मान पर लाज़िम है कि इन बातों से एहतिराज़ करे और अ़हद पूरा करने और वा'दा वफ़ा करने में पूरी कोशिश करे। ह़दीस शरीफ़ में है : मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : जब बात करे झूट बोले, जब वा'दा करे ख़िलाफ़ करे, जब उस के पास अमानत रखी जाए ख़ियानत करे। **181 :** उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं मुनाफ़िक़ीन के दिलों की बात भी जानता है और जो आपस में वोह एक दूसरे से कहें वोह भी। **182 शाने नुज़ूल :** जब आयते सदक़ा नाज़िल हुई तो लोग सदक़ा लाए उन में कोई बहुत कसीर लाए उन्हें तो मुनाफ़िक़ीन ने रियाकार कहा और कोई एक साअ़ (3 ½ सेर) (3840 ग्राम या'नी चार किलो में 20 ग्राम कम। दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, बाबुल मदीना कराची) लाए तो उन्हें कहा : अल्लाह को इस की क्या परवाह, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि जब रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने लोगों को सदक़े की रग़बत दिलाई तो ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ चार हज़ार दिरहम लाए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** मेरा कुल माल आठ हज़ार दिरहम था चार हज़ार तो येह राहे ख़ुदा में ह़ाज़िर है और चार हज़ार मैं ने घर वालों के लिये रोक लिये हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया : जो तुम ने दिया अल्लाह उस में भी बरकत फ़रमाए और जो रोक लिया उस में भी बरकत फ़रमाए। हुज़ूर की दुआ़ का येह असर हुवा कि इन का माल बहुत बढ़ा यहां तक कि जब इन की वफ़ात हुई तो इन्हों ने दो बीबियां छोड़ीं उन्हें आठवां हिस्सा मिला जिस की मिक़्दार एक लाख साठ हज़ार दिरहम थी। **183 :** अबू अ़क़ील अन्सारी एक साअ़ खजूरें ले कर ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि मैं ने आज रात पानी खींचने की मज़दूरी की उस की उजरत दो साअ़ खजूरें मिलीं एक साअ़ तो मैं घर वालों के लिये छोड़ आया और एक साअ़ राहे ख़ुदा में ह़ाज़िर है। हुज़ूर ने येह सदक़ा क़बूल फ़रमाया और उस की क़द्र की। **184 :** मुनाफ़िक़ीन। और सदक़े की क़िल्लत पर आ़र दिलाते हैं।

www.dawateislami.net

لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ

बख़्शेगा[185] येह इस लिये कि वोह अल्लाह और उस के रसूल से मुन्किर हुए और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह

الْفٰسِقِيْنَ ﴿۸۰﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْۤا

नहीं देता[186] पीछे रह जाने वाले इस पर ख़ुश हुए कि वोह रसूल के पीछे बैठ रहे[187] और उन्हें गवारा न हुवा

اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي

कि अपने माल और जान से अल्लाह की राह में लड़ें और बोले इस गरमी

الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَلْيَضْحَكُوْا

में न निकलो तुम फ़रमाओ जहन्नम की आग सब से सख़्त गर्म है किसी त़रह उन्हें समझ होती[188] तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा

قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ

हंसें और बहुत रोएं[189] बदला उस का जो कमाते थे[190] फिर ऐ महबूब[191] अगर अल्लाह तुम्हें

اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا

उन[192] में से किसी गुरोह की त़रफ़ वापस ले जाए और वोह[193] तुम से जिहाद को निकलने की इजाज़त मांगें तो तुम फ़रमाना कि तुम कभी

مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ

मेरे साथ न चलो और हरगिज़ मेरे साथ किसी दुश्मन से न लड़ो तुम ने पहली दफ़्आ़ बैठ रहना

مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا

पसन्द किया तो बैठ रहो पीछे रह जाने वालों के साथ[194] और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना

185 शाने नुज़ूल : ऊपर की आयतें जब नाज़िल हुईं और मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ खुल गया और मुसल्मानों पर ज़ाहिर हो गया तो मुनाफ़िक़ीन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आप से मा'ज़िरत कर के कहने लगे कि आप हमारे लिये इस्तिग़फ़ार कीजिये। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि अल्लाह तआ़ला हरगिज़ उन की मग़्फ़िरत न फ़रमाएगा चाहे आप इस्तिग़फ़ार में मुबालग़ा करें। **186 :** जो ईमान से ख़ारिज हों जब तक कि वोह कुफ़्र पर रहें। (مدارک) **187 :** और ग़ज़्वए तबूक में न गए **188 :** तो थोड़ी देर की गरमी बरदाश्त करते और हमेशा की आग में जलने से अपने आप को बचाते। **189 :** या'नी दुन्या में ख़ुश होना और हंसना चाहे कितनी ही दराज़ मुद्दत के लिये हो मगर वोह आख़िरत के रोने के मुक़ाबिल थोड़ा है क्यूं कि दुन्या फ़ानी है और आख़िरत दाइम और बाक़ी है। **190 :** या'नी आख़िरत का रोना दुन्या में हंसने और ख़बीस अ़मल करने का बदला है। ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम जानते वोह जो मैं जानता हूं तो थोड़ा हंसते और बहुत रोते। **191 :** ग़ज़्वए तबूक के बा'द **192 :** मुतख़ल्लिफ़ीन (पीछे रह जाने वालों) **193 :** अगर वोह मुनाफ़िक़ जो तबूक में जाने से बैठ रहा था। **194 :** औ़रतों, बच्चों, बीमारों और अपाहजों के। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि जिस शख़्स से मक्र व ख़द्अ़ (धोका और फ़रेब) ज़ाहिर हो उस से इन्क़िताअ़ और अ़लाह़दगी करना चाहिये और मह़्ज़ इस्लाम के मुद्दई होने से मुसाह़बत व मुवाफ़क़त (या'नी हम नशीनी और दोस्ती) जाइज़ नहीं होती, इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ मुनाफ़िक़ीन के जिहाद में जाने को मन्अ़ फ़रमा दिया। आज कल जो लोग कहते हैं कि हर कलिमा गो को मिला लो और उस के साथ इत्तिफ़ाक़ो इत्तिहाद करो येह इस हुक्मे क़ुरआनी के बिल्कुल ख़िलाफ़ है।

www.dawateislami.net

وَلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ

और न उस की क़ब्र पर खड़े होना बेशक वोह **अल्लाह** व रसूल से मुन्किर हुए और फ़िस्क़ ही

فٰسِقُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰهُ اَنْ

में मर गए[195] और उन के माल या औलाद पर तअ़ज्जुब न करना **अल्लाह** येही चाहता है कि

یُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِی الدُّنْیَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَاِذَاۤ

इसे दुन्या में उन पर वबाल करे और कुफ़्र ही पर उन का दम निकल जाए और जब

اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا

कोई सूरत उतरे कि **अल्लाह** पर ईमान लाओ और उस के रसूल के हमराह जिहाद करो तो उन के मक़्दूर (ताक़त रखने) वाले

الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِیْنَ ﴿۸۶﴾ رَضُوْا بِاَنْ یَّكُوْنُوْا

तुम से रुख़्सत मांगते हैं और कहते हैं हमें छोड़ दीजिये कि बैठ रहने वालों के साथ हो लें उन्हें पसन्द आया कि पीछे रहने वाली

مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا یَفْقَهُوْنَ ﴿۸۷﴾ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ

औ़रतों के साथ हो जाएं और उन के दिलों पर मोहर कर दी गई[196] तो वोह कुछ नहीं समझते[197] लेकिन रसूल

---

195 : इस आयत में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मुनाफ़िक़ीन के जनाज़े की नमाज़ और उन के दफ़्न में शिर्कत करने से मन्अ़ फ़रमाया गया। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ किसी ह़ाल में जाइज़ नहीं और काफ़िर की क़ब्र पर दफ़्न व ज़ियारत के लिये खड़े होना भी मम्नूअ़ है और येह जो फ़रमाया "और फ़िस्क़ ही में मर गए" यहां फ़िस्क़ से कुफ़्र मुराद है, क़ुरआने करीम में और जगह भी फ़िस्क़ ब मा'ना कुफ़्र वारिद हुवा है जैसे कि आयत "اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا" में। **मस्अला :** फ़ासिक़ के जनाज़े की नमाज़ जाइज़ है इस पर सह़ाबा और ताबिई़न का इज्माअ़ है और इस पर उ़लमाए सालिह़ीन का अ़मल और येही अहले सुन्नत व जमाअ़त का मज़हब है। **मस्अला :** इस आयत से मुसल्मानों के जनाज़े की नमाज़ का जवाज़ भी साबित होता है और इस का फ़र्ज़े किफ़ाया होना ह़दीसे मश्हूर से साबित है। **मस्अला :** जिस शख़्स के मोमिन या काफ़िर होने में शुबा हो उस के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ी जाए। **मस्अला :** जब कोई काफ़िर मर जाए और उस का वली मुसल्मान हो तो उस को चाहिये कि ब त़रीक़े मस्नून ग़ुस्ल न दे बल्कि नजासत की त़रह़ उस पर पानी बहा दे और न कफ़्ने मस्नून दे बल्कि इतने कपड़े में लपेट दे जिस से सत्र छुप जाए और न सुन्नत त़रीक़े पर दफ़्न करे न ब त़रीक़े सुन्नत क़ब्र बनाए सिर्फ़ गढ़ा खोद कर दबा दे। **शाने नुज़ूल :** अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ों का सरदार था जब वोह मर गया तो उस के बेटे अ़ब्दुल्लाह ने जो मुसल्मान सालेह़ मुख़्लिस सह़ाबी और कसीरुल इ़बादत थे। इन्हों ने येह ख़्वाहिश की, कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم इन के बाप अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल को कफ़न के लिये अपना क़मीसे मुबारक इ़नायत फ़रमा दें और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की राय इस के ख़िलाफ़ थी लेकिन चूंकि उस वक़्त तक मुमानअ़त नहीं हुई थी और हु़ज़ूर को मा'लूम था कि हु़ज़ूर का येह अ़मल एक हज़ार आदमियों के ईमान लाने का बाइ़स होगा इस लिये हु़ज़ूर ने अपनी क़मीस भी इ़नायत फ़रमाई और जनाज़े की शिर्कत भी की। क़मीस देने की एक वज्ह येह भी थी कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास जो बद्र में असीर हो कर आए थे तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने अपना कुरता उन्हें पहनाया था हु़ज़ूर को उस का बदला कर देना भी मन्ज़ूर था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, और इस के बा'द फिर कभी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े की शिर्कत न फ़रमाई और हु़ज़ूर की वोह मस्लह़त भी पूरी हुई। चुनान्चे जब कुफ़्फ़ार ने देखा कि ऐसा शदीदुल अ़दावत शख़्स जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के कुरते से बरकत ह़ासिल करना चाहता है तो उस के अ़क़ीदे में भी आप **अल्लाह** के ह़बीब और उस के सच्चे रसूल हैं येह सोच कर हज़ार काफ़िर मुसल्मान हो गए। **196 :** उन के कुफ़्र व निफ़ाक़ इख़्तियार करने के बाइ़स। **197 :** कि जिहाद में क्या फ़ौज़ व सआ़दत (काम्याबी व ख़ुश बख़्ती) और बैठ रहने में कैसी हलाकत व शक़ावत (नाकामी व बद बख़्ती) है।

www.dawateislami.net

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ

और जो उन के साथ ईमान लाए उन्हों ने अपने मालों जानों से जिहाद किया और उन्हीं के लिये

الْخَيْرٰتُ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

भलाइयां हैं[198] और येही मुराद को पहुंचे अल्लाह ने उन के लिये तय्यार कर रखी हैं बिहिश्तें जिन

ع ١٧

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ ع وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ

के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे येही बड़ी मुराद मिलनी है और बहाने बनाने वाले

مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

गंवार आए[199] कि उन्हें रुख़्सत दी जाए और बैठ रहे वोह जिन्हों ने अल्लाह व रसूल से झूट बोला था[200]

سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ

जल्द उन में के काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा[201] जई़फ़ों पर कुछ ह़रज नहीं[202]

وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا

और न बीमारों पर[203] और उन पर जिन्हें ख़र्च का मक़्दूर (त़ाक़त) न हो[204] जब

نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

कि अल्लाह व रसूल के ख़ैर ख़्वाह रहें[205] नेकी वालों पर कोई राह नहीं[206] और अल्लाह बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ لا وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ

मेहरबान है और न उन पर जो तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों कि तुम उन्हें सुवारी अ़त़ा फ़रमाओ[207] तुम से येह जवाब पाएं कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं जिस

198 : दोनों जहान की **199 :** सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत में जिहाद से रह जाने का उ़ज़्र करने। ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि येह आ़मिर बिन तुफ़ैल की जमाअ़त थी, इन्हों ने सय्यिदे आ़लम علیہ الصلوٰۃ والسلام से अ़र्ज़ किया कि **या नबिय्यल्लाह!** अगर हम आप के साथ जिहाद में जाएं तो क़बीलए त़य के अ़रब हमारी बीबियों, बच्चों और जानवरों को लूट लेंगे। हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया मुझे अल्लाह ने तुम्हारे ह़ाल से ख़बरदार किया है और वोह मुझे तुम से बे नियाज़ करेगा। अ़म्र बिन अ़ला ने कहा कि उन लोगों ने उ़ज़्रे बात़िल बना कर पेश किया था। **200 :** येह दूसरे गुरोह का ह़ाल है जो बिग़ैर किसी उ़ज़्र के बैठ रहे, येह मुनाफ़िक़ीन थे इन्हों ने ईमान का दा'वा झूटा किया था। **201 :** दुन्या में क़त्ल होने का और आख़िरत में जहन्नम का। **202 :** बात़िल वालों का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द सच्चे उ़ज़्र वालों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि इन पर से जिहाद की फ़र्ज़िय्यत साक़ित़ है। येह कौन लोग हैं? उन के चन्द त़बक़े बयान फ़रमाए : पहले ज़ईफ़ जैसे कि बूढ़े, बच्चे, औ़रतें और वोह शख़्स भी इन्ही में दाख़िल है जो पैदाइशी कमज़ोर ज़ईफ़ नह़ीफ़ नाकारा हो। **203 :** येह दूसरा त़बक़ा है जिस में अन्धे, लंगड़े, अपाहज भी दाख़िल हैं। **204 :** और सामाने जिहाद न कर सकें, येह लोग रह जाएं तो इन पर कोई गुनाह नहीं। **205 :** इन की इत़ाअ़त करें और मुजाहिदीन के घर वालों की ख़बर गीरी रखें। **206 :** मुआख़ज़े की। **207 शाने नुज़ूल :** अस्ह़ाबे रसूल صلی اللہ علیہ وسلم में से चन्द ह़ज़रात जिहाद में जाने के लिये ह़ाज़िर हुए, उन्हों ने हुज़ूर से सुवारी की दरख़्वास्त की। हुज़ूर ने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं जिस पर मैं तुम्हें सुवार करूं तो वोह रोते वापस हुए उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई।

اَحۡمِلُكُمۡ عَلَیۡهِ ۪ تَوَلَّوۡا وَّ اَعۡیُنُهُمۡ تَفِیۡضُ مِنَ الدَّمۡعِ حَزَنًا اَلَّا یَجِدُوۡا

पर तुम्हें सुवार करूं इस पर यूं वापस जाएं कि उन की आंखों से आंसू उबलते हों इस ग़म से कि ख़र्च का

مَا یُنۡفِقُوۡنَ ﴿۹۲﴾ؕ اِنَّمَا السَّبِیۡلُ عَلَی الَّذِیۡنَ یَسۡتَاۡذِنُوۡنَكَ وَ هُمۡ

मक़्दूर न पाया मुआख़ज़ा (पकड़) तो उन से है जो तुम से रुख़्सत मांगते हैं और वोह

اَغۡنِیَآءُ ۚ رَضُوۡا بِاَنۡ یَّكُوۡنُوۡا مَعَ الۡخَوَالِفِ ۙ وَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰی

दौलत मन्द हैं[208] उन्हें पसन्द आया कि औ़रतों के साथ पीछे बैठ रहें और अल्लाह ने उन के दिलों पर

قُلُوۡبِهِمۡ فَهُمۡ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۹۳﴾

मोहर कर दी तो वोह कुछ नहीं जानते[209]

---

208 : जिहाद में जाने की क़ुदरत रखते हैं बा वुजूद इस के **209 :** कि जिहाद में क्या नफ़्अ़ व सवाब है।

www.dawateislami.net

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ

तुम से बहाने बनाएंगे[210] जब तुम उन की त़रफ़ लौट कर जाओगे तुम फ़रमाना बहाने न बनाओ हम हरगिज़

نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ

तुम्हारा यक़ीन न करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारी ख़बरें दे दी हैं और अब अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम

وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا

देखेंगे[211] फिर उस की त़रफ़ पलट कर जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सब को जानता है वोह तुम्हें जता देगा जो कुछ

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۴﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ

तुम करते थे अब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़सम खाएंगे जब[212] तुम उन की त़रफ़ पलट कर जाओगे

لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ز وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ج

इस लिये कि तुम उन के ख़याल में न पड़ो[213] तो हां तुम उन का ख़याल छोड़ो[214] वोह तो निरे (बिल्कुल) पलीद हैं[215] और उन का ठिकाना जहन्नम है

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۵﴾ يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ج فَاِنْ

बदला उस का जो कमाते थे[216] तुम्हारे आगे क़समें खाते हैं कि तुम उन से राज़ी हो जाओ तो अगर

تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۹۶﴾ اَلْاَعْرَابُ

तुम उन से राज़ी हो जाओ[217] तो बेशक अल्लाह तो फ़ासिक़ लोगों से राज़ी न होगा[218] गंवार[219]

210 : और बात़िल उ़ज़्र पेश करेंगे येह जिहाद से रह जाने वाले मुनाफ़िक़ तुम्हारे इस सफ़र से वापस होने के वक़्त **211 :** कि तुम निफ़ाक़ से तौबा करते हो या इस पर क़ाइम रहते हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि उन्हों ने वा'दा किया था कि ज़मानए मुस्तक़्बिल में वोह मोमिनीन की मदद करेंगे हो सकता है कि इसी की निस्बत फ़रमाया गया हो कि अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे कि तुम अपने इस अ़ह्द को भी वफ़ा करते हो या नहीं। **212 :** अपने इस सफ़र से वापस हो कर मदीनए त़य्यिबा में **213 :** और उन पर मलामत व इ़ताब न करो। **214 :** और उन से इज्तिनाब करो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : मुराद येह है कि उन के साथ बैठना, उन से बोलना तर्क कर दो चुनान्चे जब नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीने तशरीफ़ लाए तो हु़ज़ूर ने मुसल्मानों को हुक्म दिया कि मुनाफ़िक़ीन के पास न बैठें, उन से बात न करें क्यूं कि उन के बात़िन ख़बीस और आ'माल क़बीह़ (बुरे) हैं और मलामत व इ़ताब से उन की इस्लाह़ न होगी इस लिये कि **215 :** और पलीदी के पाक होने का कोई त़रीक़ा नहीं। **216 :** दुन्या में ख़बीस अ़मल। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत जद बिन क़ैस और मुअ़त्तिब बिन क़ुशैर और इन के साथियों के ह़क़ में नाज़िल हुई, येह अस्सी मुनाफ़िक़ थे। नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इन के पास न बैठो, इन से कलाम न करो। मक़ातिल ने कहा कि येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के ह़क़ में नाज़िल हुई, इस ने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने क़सम खाई थी कि अब कभी वोह जिहाद में जाने से सुस्ती न करेगा और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की थी कि हु़ज़ूर उस से राज़ी हो जाएं इस पर येह आयत और इस के बा'द वाली आयत नाज़िल हुई **217 :** और उन के उ़ज़्र क़बूल कर लो तो इस से उन्हें कुछ नफ़्अ़ न होगा, क्यूं कि तुम अगर उन की क़समों का ए'तिबार भी कर लो **218 :** इस लिये कि वोह उन के दिल के कुफ़्रो निफ़ाक़ को जानता है। **219 :** जंगल के रहने वाले।

www.dawateislami.net

اَشَدُّ كُفْرًا وَّ نِفَاقًا وَّ اَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى

कुफ़्र और निफ़ाक़ में ज़ियादा सख़्त हैं[220] और इसी क़ाबिल हैं कि अल्लाह ने जो हुक्म अपने रसूल पर उतारे उस

رَسُوْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۹۷﴾ وَ مِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا

से जाहिल रहें और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है और कुछ गंवार वोह हैं कि जो अल्लाह की राह में ख़र्च करें

يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ يَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَ

तो उसे तावान समझें[221] और तुम पर गर्दिशें (मसाइब) आने के इन्तिज़ार में रहें[222] उन्हीं पर है बुरी गर्दिश[223] और

اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۹۸﴾ وَ مِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ

अल्लाह सुनता जानता है और कुछ गाउं वाले वोह हैं जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान

الْاٰخِرِ وَ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَ صَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ

रखते हैं[224] और जो ख़र्च करें उसे अल्लाह की नज़्दीकियों और रसूल से दुआएं लेने का ज़रीआ समझें[225]

اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

हां हां वोह उन के लिये बाइसे क़ुर्ब है अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿۹۹﴾ ع وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَ الْاَنْصَارِ وَ ع ٢

मेहरबान है और सब में अगले पहले मुहाजिर[226] और अन्सार[227] और

الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ

जो भलाई के साथ उन के पैरव (पैरवी करने वाले) हुए[228] अल्लाह उन से राज़ी[229] और वोह अल्लाह से राज़ी[230] और उन के लिये

220 : क्यूं कि वोह मजालिसे इल्म और सोहबते उ़लमा से दूर रहते हैं। **221 :** क्यूं कि वोह जो कुछ ख़र्च करते हैं रिज़ाए इलाही और त़लबे सवाब के लिये तो करते नहीं रियाकारी और मुसल्मानों के ख़ौफ़ से ख़र्च करते हैं। **222 :** और येह राह देखते हैं कि कब मुसल्मानों का ज़ोर कम हो और कब वोह मग़लूब हों, उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह को क्या मन्ज़ूर है वोह बतला दिया जाता है। **223 :** और वोही रन्जो बला और बदह़ाली में गिरिफ़्तार होंगे। **शाने नुज़ूल :** येह आयत क़बीलए असद व ग़त़फ़ान व तमीम के आ'राबियों (दीहातियों) के ह़क़ में नाज़िल हुई फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इन में से जिन को मुस्तस्ना किया उन का ज़िक्र अगली आयत में है। (ख़ाज़िन) **224 :** मुजाहिद ने कहा कि येह लोग क़बीलए मुज़ैना में से बनी मुक़र्रिन हैं। कल्बी ने कहा : वोह अस्लम और ग़िफ़ार और जुहैना के क़बीले हैं। बुख़ारी और मुस्लिम की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क़ुरैश और अन्सार और जुहैना और मुज़ैना और अस्लम और शुजाअ़ और ग़िफ़ार मवाली हैं, अल्लाह और रसूल के सिवा इन का कोई मौला नहीं। **225 :** कि जब रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़ुज़ूर में सदक़ा लाएं तो ह़ुज़ूर उन के लिये ख़ैरो बरकत व मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमाएं, येही रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का त़रीक़ा था। **मस्अला :** येही फ़ातिह़ा की अस्ल है कि सदक़े के साथ दुआ़ए मग़्फ़िरत की जाती है, लिहाज़ा फ़ातिह़ा को बिद्अ़त व ना रवा (ना जाइज़) बताना क़ुरआन व ह़दीस के ख़िलाफ़ है। **226 :** वोह ह़ज़रात जिन्हों ने दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ें पढ़ीं या अहले बद्र या अहले बैअ़ते रिज़्वान **227 :** अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए ऊला जो छ[6] ह़ज़रात थे और अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए सानिया जो बारह थे और अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए सालिसा जो सत्तर अस्ह़ाब हैं, येह ह़ज़रात साबिक़ीने अन्सार कहलाते हैं। (ख़ाज़िन) **228 :** कहा गया है कि इन से बाक़ी मुहाजिरीन व अन्सार मुराद हैं, तो अब तमाम अस्ह़ाब

لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ

तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें येही बड़ी

الْعَظِیْمُ ﴿۱۰۰﴾ وَ مِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَ مِنْ اَهْلِ

काम्याबी है और तुम्हारे आस पास[231] के कुछ गंवार मुनाफ़िक़ हैं और कुछ मदीना

الْمَدِیْنَةِ ۛ۫ مَرَدُوْا عَلَی النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ

वाले उन की ख़ू (आदत) हो गई है निफ़ाक़ तुम उन्हें नहीं जानते हम उन्हें जानते हैं[232]

سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَیْنِ ثُمَّ یُرَدُّوْنَ اِلٰی عَذَابٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۰۱﴾ۚ وَ اٰخَرُوْنَ

जल्द हम उन्हें दो बार[233] अ़ज़ाब करेंगे फिर बड़े अ़ज़ाब की त़रफ़ फेरे जाएंगे[234] और कुछ और हैं जो

اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّ اٰخَرَ سَیِّئًا ؕ عَسَی اللّٰهُ اَنْ

अपने गुनाहों के मुक़िर (इक़रारी) हुए[235] और मिलाया एक काम अच्छा[236] और दूसरा बुरा[237] क़रीब है कि

یَّتُوْبَ عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۰۲﴾ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ

अल्लाह उन की तौबा क़बूल करे बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ऐ मह़बूब उन के माल में से

وقف منزل

इस में आ गए और एक क़ौल येह है कि पैरव होने वालों से क़ियामत तक के वोह ईमानदार मुराद हैं जो ईमान व त़ाअ़त व नेकी में अन्सार व मुहाजिरीन की राह चलें। **229 :** उस को उन के नेक अ़मल क़बूल **230 :** उस के सवाब व अ़त़ा से ख़ुश **231 :** या'नी मदीनए त़य्यिबा के क़ुर्बो जवार **232 :** इस के मा'ना या तो येह हैं कि ऐसा जानना जिस का असर उन्हें मा'लूम हो वोह हमारा जानना है कि हम उन्हें अ़ज़ाब करेंगे या हुज़ूर से मुनाफ़िक़ीन के ह़ाल जानने की नफ़ी ब ए'तिबारे मा सबक़ है और इस का इ़ल्म बा'द को अ़त़ा हुवा जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : "وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِیْ لَحْنِ الْقَوْلِ" (جمل) कल्बी व सुद्दी ने कहा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रोज़े जुमुआ़ ख़ुत़्बे के लिये क़ियाम कर के नाम बनाम फ़रमाया : निकल ऐ फ़ुलां ! तू मुनाफ़िक़ है, निकल ऐ फ़ुलां ! तू मुनाफ़िक़ है। तो मस्जिद से चन्द लोगों को रुस्वा कर के निकाला। इस से भी मा'लूम होता है कि हुज़ूर को इस के बा'द मुनाफ़िक़ीन के ह़ाल का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया गया। **233 :** एक बार तो दुन्या में रुस्वाई और क़त्ल के साथ और दूसरी मरतबा क़ब्र में **234 :** या'नी अ़ज़ाबे दोज़ख़ की त़रफ़ जिस में हमेशा गिरिफ़्तार रहेंगे। **235 :** और उन्हों ने दूसरों की त़रह़ झूटे उ़ज़्र न किये और अपने फ़े'ल पर नादिम हुए। **शाने नुज़ूल :** जुम्हूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत मदीनए त़य्यिबा के मुसल्मानों की एक जमाअ़त के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ग़ज़्वए तबूक में ह़ाज़िर न हुए थे, इस के बा'द नादिम हुए और तौबा की और कहा : अफ़्सोस हम गुमराहों के साथ या औ़रतों के साथ रह गए और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब जिहाद में हैं, जब हुज़ूर अपने सफ़र से वापस हुए और क़रीबे मदीना पहुंचे तो उन लोगों ने क़सम खाई कि हम अपने आप को मस्जिद के सुतूनों से बांध देंगे और हरगिज़ न खोलेंगे यहां तक कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ही खोलें, येह क़समें खा कर वोह मस्जिद के सुतूनों से बंध गए। जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए और उन्हें मुलाह़ज़ा किया तो फ़रमाया : येह कौन हैं ? अ़र्ज़ किया गया : येह वोह लोग हैं जो जिहाद में ह़ाज़िर होने से रह गए थे, इन्हों ने अल्लाह से अ़ह्द किया है कि येह अपने आप को न खोलेंगे जब तक हुज़ूर इन से राज़ी हो कर इन्हें ख़ुद न खोलें। हुज़ूर ने फ़रमाया : और मैं अल्लाह की क़सम खाता हूं कि मैं इन्हें न खोलूंगा न इन का उ़ज़्र क़बूल करूं जब तक कि मुझे अल्लाह की त़रफ़ से इन के खोलने का हुक्म दिया जाए। तब येह आयत नाज़िल हुई और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें खोला तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** येह माल हमारे रह जाने के बाइ़स हुए, इन्हें ले लीजिये और सदक़ा कीजिये और हमें पाक कर दीजिये और हमारे लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमाइये। हुज़ूर ने फ़रमाया : मुझे तुम्हारे माल लेने का हुक्म नहीं दिया गया। इस पर अगली आयत नाज़िल हुई "خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ"। **236 :** यहां अ़मले सालेह़ से या ए'तिराफ़े क़ुसूर और तौबा मुराद है या इस तख़ल्लुफ़ (जिहाद से रह जाने) से पहले ग़ज़्वात में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ ह़ाज़िर होना या त़ाअ़त व तक़्वा के तमाम आ'माल इस तक़्दीर पर आयत तमाम मुसल्मानों के ह़क़ में होगी। **237 :** इस से तख़ल्लुफ़ या'नी जिहाद से रह जाना मुराद है।

www.dawateislami.net

صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ط اِنَّ صَلٰوتَكَ

ज़कात तह्सील (वुसूल) करो जिस से तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उन के ह़क़ में दुआए ख़ैर करो[238] बेशक तुम्हारी दुआ

سَكَنٌ لَّهُمْ ط وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۳﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ

उन के दिलों का चैन है और **अल्लाह** सुनता जानता है क्या उन्हें ख़बर नहीं कि **अल्लाह** ही अपने

التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ

बन्दों की तौबा क़बूल करता और सदक़े ख़ुद अपने दस्ते मुबारक में लेता है और येह कि **अल्लाह** ही तौबा क़बूल करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۴﴾ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَ

मेहरबान है[239] और तुम फ़रमाओ काम करो अब तुम्हारे काम देखेगा **अल्लाह** और उस के रसूल और

الْمُؤْمِنُوْنَ ط وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا

मुसल्मान और जल्द उस की त़रफ़ पलटोगे जो छुपा और खुला सब जानता है तो वोह तुम्हारे काम

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ ج وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ

तुम्हें जता देगा और कुछ[240] मौक़ूफ़ रखे गए हैं **अल्लाह** के हुक्म पर या उन पर अ़ज़ाब करे

وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۰۶﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

या उन की तौबा क़बूल करे[241] और **अल्लाह** इल्मो हिक्मत वाला है और वोह जिन्हों ने मस्जिद

مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا

बनाई[242] नुक़्सान पहुंचाने को[243] और कुफ़्र के सबब[244] और मुसल्मानों में तफ़्रिक़ा डालने को[245] और उस के इन्तिज़ार में

238 : आयत में जो सदक़ा वारिद हुवा है इस के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल हैं : **एक** तो येह कि वोह सदक़ा ग़ैर वाजिबा था जो बत़ौर कफ़्फ़ारा के उन साहिबों ने दिया था जिन का ज़िक्र ऊपर की आयत में है। **दूसरा** क़ौल येह है कि इस सदक़े से मुराद वोह ज़कात है जो उन के ज़िम्मे वाजिब थी, वोह ताइब हुए और उन्हों ने ज़कात अदा करनी चाही तो **अल्लाह** तआ़ला ने उस के लेने का हुक्म दिया। इमाम अबू बक्र राज़ी जसास ने इस क़ौल को तरजीह़ दी है कि सदक़े से ज़कात मुराद है। (خازن واحکام القرآن) मदारिक में है कि सुन्नत येह है कि सदक़ा लेने वाला सदक़ा देने वाले के लिये दुआ करे और बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा की ह़दीस है कि जब कोई नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास सदक़ा लाता आप उस के ह़क़ में दुआ करते। मेरे बाप ने सदक़ा ह़ाज़िर किया तो ह़ुज़ूर ने दुआ फ़रमाई "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اَبِىْ اَوْفٰى" (या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अबी औफ़ा पर रह़मत फ़रमा)। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि फ़ातिह़ा में जो सदक़ा लेने वाले सदक़ा पा कर दुआ करते हैं येह क़ुरआन व ह़दीस के मुत़ाबिक़ है। **239 :** इस में तौबा करने वालों को बिशारत दी गई कि इन की तौबा और इन के सदक़ात मक़्बूल हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि जिन लोगों ने अब तक तौबा नहीं की इस आयत में उन्हें तौबा और सदक़े की तरग़ीब दी गई। **240 :** मुतख़ल्लिफ़ीन में से **241 :** मुतख़ल्लिफ़ीन या'नी ग़ज़्वए तबूक से रह जाने वाले तीन क़िस्म के थे : **एक** मुनाफ़िक़ीन जो निफ़ाक़ के ख़ूगर और आ़दी थे। **दूसरे** वोह लोग जिन्हों ने क़ुसूर के ए'तिराफ़ और तौबा में जल्दी की जिन का ऊपर ज़िक्र हो चुका। **तीसरे** वोह जिन्हों ने तवक़्क़ुफ़ किया और जल्दी तौबा न की, येही इस आयत से मुराद हैं। **242 शाने नुज़ूल :** येह आयत एक जमाअ़ते मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने मस्जिदे क़ुबा को नुक़्सान पहुंचाने और उस की जमाअ़त मुतफ़र्रिक़ करने के लिये उस

www.dawateislami.net

لِّمَنۡ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَلَيَحۡلِفُنَّ اِنۡ اَرَدۡنَاۤ اِلَّا

जो पहले से अल्लाह और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ है[246] और वोह ज़रूर क़समें खाएंगे कि हम ने तो

الۡحُسۡنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشۡهَدُ اِنَّهُمۡ لَـكٰذِبُوۡنَ ۞ لَا تَقُمۡ فِيۡهِ اَبَدًا ؕ

भलाई चाही और अल्लाह गवाह है कि वोह बेशक झूटे हैं उस मस्जिद में तुम कभी खड़े न होना[247]

لَمَسۡجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقۡوٰى مِنۡ اَوَّلِ يَوۡمٍ اَحَقُّ اَنۡ تَقُوۡمَ فِيۡهِ ؕ

बेशक वोह मस्जिद कि पहले ही दिन से जिस की बुन्याद परहेज़ गारी पर रखी गई है[248] वोह इस क़ाबिल है कि तुम उस में खड़े हो

فِيۡهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوۡنَ اَنۡ يَّتَطَهَّرُوۡا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الۡمُطَّهِّرِيۡنَ ۞

उस में वोह लोग हैं कि खूब सुथरा होना चाहते हैं[249] और सुथरे अल्लाह को प्यारे हैं

के क़रीब एक मस्जिद बनाई थी, इस में एक बड़ी चाल थी वोह येह कि अबू आ़मिर जो ज़मानए जाहिलिय्यत में नसरानी राहिब हो गया था सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के मदीनए तय्यिबा तशरीफ़ लाने पर हुज़ूर से कहने लगा : येह कौन सा दीन है जो आप लाए हैं ? हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं मिल्लते ह़नीफ़िय्या दीने इब्राहीम लाया हूं। कहने लगा : मैं उसी दीन पर हूं। हुज़ूर ने फ़रमाया : नहीं। उस ने कहा कि आप ने इस में कुछ और मिला दिया है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि नहीं, मैं ख़ालिस साफ़ मिल्लत लाया हूं। अबू आ़मिर ने कहा : हम में से जो झूटा हो अल्लाह उस को मुसाफ़रत में तन्हा और बेकस कर के हलाक करे। हुज़ूर ने आमीन फ़रमाया। लोगों ने उस का नाम अबू आ़मिर फ़ासिक़ रख दिया। रोज़े उहुद अबू आ़मिर फ़ासिक़ ने हुज़ूर से कहा कि जहां कहीं कोई क़ौम आप से जंग करने वाली मिलेगी मैं उस के साथ हो कर आप से जंग करूंगा चुनान्चे जंगे हुनैन तक उस का येही मा'मूल रहा और वोह हुज़ूर के साथ मसरूफ़े जंग रहा। जब हवाज़िन को शिकस्त हुई और वोह मायूस हो कर मुल्के शाम की त़रफ़ भागा तो उस ने मुनाफ़िक़ीन को ख़बर भेजी कि तुम से जो सामाने जंग हो सके क़ुव्वत व सिलाह़ सब जम्अ़ करो और मेरे लिये एक मस्जिद बनाओ मैं शाहे रूम के पास जाता हूं वहां से रूमी लश्कर ले कर आऊंगा और (सय्यिदे आ़लम) मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) और इन के अस्ह़ाब को निकालूंगा, येह ख़बर पा कर उन लोगों ने मस्जिदे ज़िरार बनाई थी और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया था येह मस्जिद हम ने आसानी के लिये बना दी है कि जो लोग बूढ़े ज़ईफ़ कमज़ोर हैं वोह इस में ब फ़राग़त नमाज़ पढ़ लिया करें आप उस में एक नमाज़ पढ़ दीजिये और बरकत की दुआ़ फ़रमा दीजिये। हुज़ूर ने फ़रमाया कि अब तो मैं सफ़रे तबूक के लिये पा ब रकाब (चलने को तय्यार) हूं वापसी पर अल्लाह की मरज़ी होगी तो वहां नमाज़ पढ़ लूंगा। जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक से वापस हो कर मदीने शरीफ़ के क़रीब एक मौज़अ़ (गाउं) में ठहरे तो मुनाफ़िक़ीन ने आप से दरख़्वास्त की, कि इन की मस्जिद में तशरीफ़ ले चलें, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इन के फ़ासिद इरादों का इज़्हार फ़रमाया गया, तब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बा'ज़ अस्ह़ाब को हुक्म दिया कि उस मस्जिद को जा कर ढा दें और जला दें चुनान्चे ऐसा ही किया गया और अबू आ़मिर राहिब मुल्के शाम में ब ह़ालते सफ़र बे कसी व तन्हाई में हलाक हुवा। **243 :** मस्जिदे क़ुबा वालों के। **244 :** कि वहां ख़ुदा और रसूल के साथ कुफ़्र करें और निफ़ाक़ को क़ुव्वत दें। **245 :** जो मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ के लिये मुज्तमअ़ होते हैं। **246 :** या'नी अबू आ़मिर राहिब। **247 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मस्जिदे ज़िरार में नमाज़ पढ़ने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **मस्अला :** जो मस्जिद फ़ख़्रो रिया और नुमूदो नुमाइश या रिज़ाए इलाही के सिवा और किसी ग़रज़ के लिये या ग़ैरे त़य्यिब माल से बनाई गई हो वोह मस्जिदे ज़िरार के साथ लाहिक़ है। (مدارک) **248 :** इस से मुराद मस्जिदे क़ुबा है जिस की बुन्याद रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रखी और जब तक हुज़ूर ने क़ुबा में क़ियाम फ़रमाया उस में नमाज़ पढ़ी। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हर हफ़्ते मस्जिदे क़ुबा में तशरीफ़ लाते थे। दूसरी ह़दीस में है कि मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने का सवाब उ़मरह के बराबर है। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि इस से मस्जिदे मदीना मुराद है और इस में भी ह़दीसें वारिद हैं, इन दोनों बातों में कुछ तआ़रुज़ नहीं क्यूं कि आयत का मस्जिदे क़ुबा के ह़क़ में नाज़िल होना इस को मुस्तल्ज़िम नहीं है कि मस्जिदे मदीना में येह औसाफ़ न हों। **249 :** तमाम नजासतों से या गुनाहों से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले मस्जिदे क़ुबा के ह़क़ में नाज़िल हुई। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : ऐ गुरौहे अन्सार ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी सना फ़रमाई, तुम वुज़ू और इस्तिन्जे के वक़्त क्या अ़मल करते हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हम बड़ा इस्तिन्जा तीन ढेलों से करते हैं, इस के बा'द फिर पानी से त़हारत करते हैं।

www.dawateislami.net

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ

तो क्या जिस ने अपनी बुन्याद रखी अल्लाह से डर और उस की रिज़ा पर[250] वोह भला या वोह जिस

اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَ اللّٰهُ

ने अपनी नीव चुनी (बुन्याद रखी) एक गिराउ गढ़े के कनारे[251] तो वोह उसे ले कर जहन्नम की आग में ढै पड़ा[252] और अल्लाह

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۹﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ

ज़ालिमों को राह नहीं देता वोह ता'मीर जो चुनी हमेशा उन के दिलों में खटक्ती

قُلُوْبِهِمْ اِلَّاۤ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾ ع اِنَّ اللّٰهَ

रहेगी[253] मगर येह कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं[254] और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है बेशक अल्लाह ने

اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ

मुसल्मानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है[255]

يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ يُقْتَلُوْنَ ۫ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي

अल्लाह की राह में लड़ें तो मारें[256] और मरें[257] उस के ज़िम्मए करम पर सच्चा वा'दा

التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِيْلِ وَ الْقُرْاٰنِ ؕ وَ مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا

तौरैत और इन्जील और क़ुरआन में[258] और अल्लाह से ज़ियादा क़ौल का पूरा कौन तो ख़ुशियां मनाओ

मस्अला : नजासत अगर जाए ख़ुरूज से मुतजाविज़ हो जाए तो पानी से इस्तिन्जा वाजिब है वरना मुस्तहब। **मस्अला :** ढेलों से इस्तिन्जा सुन्नत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस पर मुवाज़बत् (हमेशगी) फ़रमाई और कभी तर्क भी किया। **250 :** जैसे कि मस्जिदे क़ुबा और मस्जिदे मदीना। **251 :** जैसे कि मस्जिदे ज़िरार वाले। **252 :** मुराद येह है कि जिस शख़्स ने अपने दीन की बिना (बुन्याद) तक़्वा और रिज़ाए इलाही की मज़्बूत् सत्ह़ पर रखी वोह बेहतर है न कि वोह जिस ने अपने दीन की बिना बातिल व निफ़ाक़ के गिराउ गढ़े पर रखी। **253 :** और उस के गिराए जाने का सदमा बाक़ी रहेगा। **254 :** ख़्वाह क़त्ल हो कर या मर कर या क़ब्र में या जहन्नम में। मा'ना येह हैं कि उन के दिलों का ग़मो ग़ुस्सा ता मर्ग बाक़ी रहेगा : بمیرتا برہی اے حسود کیں رنجیست کہ از مشقتِ اوجز بمرگ نتواں رست (ऐ ह़ासिद ! ह़सद की बीमारी से छुटकारा पाने के लिये मर जा क्यूं कि इस से नजात पाने के लिये तेरे पास मौत के सिवा कोई रास्ता नहीं) और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि जब तक उन के दिल अपने क़ुसूर की नदामत और अफ़्सोस से पारह पारह न हों और वोह इख़्लास से ताइब न हों उस वक़्त तक वोह इसी रन्जो ग़म में रहेंगे। (مدارک) **255 :** राहे ख़ुदा में जानो माल ख़र्च कर के जन्नत पाने वाले ईमानदारों की एक तम्सील है जिस से कमाले लुत्फ़ो करम का इज़्हार होता है कि परवर्दगारे आ़लम ने उन्हें जन्नत अ़ता फ़रमाना उन के जानो माल का इवज़ क़रार दिया और अपने आप को ख़रीदार फ़रमाया येह कमाले इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई है कि वोह हमारा ख़रीदार बने और हम से ख़रीदे किस चीज़ को जो न हमारी बनाई हुई न हमारी पैदा की हुई, जान है तो उस की पैदा की हुई, माल है तो उस का अ़ता फ़रमाया हुवा। **शाने नुज़ूल :** जब अन्सार ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से शबे अ़क़्बा बैअ़त की तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की, कि **या रसूलल्लाह!** अपने रब के लिये और अपने लिये कुछ शर्त़ फ़रमा लीजिये जो आप चाहें। फ़रमाया : मैं अपने रब के लिये तो येह शर्त़ करता हूं कि तुम उस की इबादत करो और किसी को उस का शरीक न ठहराओ और अपने लिये येह कि जिन चीज़ों से तुम अपने जानो माल को बचाते और मह़फ़ूज़ रखते हो उस को मेरे लिये भी गवारा न करो। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हम ऐसा करें तो हमें क्या मिलेगा ? फ़रमाया : जन्नत। **256 :** ख़ुदा के दुश्मनों को **257 :** राहे ख़ुदा में **258 :** इस से साबित हुवा कि तमाम शरीअ़तों और मिल्लतों में जिहाद का हुक्म था।

www.dawateislami.net

بِبَيْعِكُمُ الَّذِیْ بَایَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ﴿۱۱۱﴾ اَلتَّآىِٕبُوْنَ

अपने सौदे की जो तुम ने उस से किया है और येही बड़ी काम्याबी है तौबा वाले[259]

الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآىِٕحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ

इ़बादत वाले[260] सराहने वाले[261] रोज़े वाले रुकूअ़ वाले सज्दा वाले[262] भलाई के

بِالْمَعْرُوْفِ وَ النَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ الْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَ

बताने वाले और बुराई से रोकने वाले और **अल्लाह** की ह़दें निगाह रखने वाले[263] और

بَشِّرِ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۱۲﴾ مَا كَانَ لِلنَّبِیِّ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ یَّسْتَغْفِرُوْا

ख़ुशी सुनाओ मुसल्मानों को[264] नबी और ईमान वालों को लाइक़ नहीं कि मुश्रिकों की

لِلْمُشْرِكِیْنَ وَ لَوْ كَانُوْۤا اُولِیْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَیَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ

बख़्शिश चाहें अगर्चे वोह रिश्तेदार हों[265] जब कि उन्हें खुल चुका कि वोह

الْجَحِیْمِ ﴿۱۱۳﴾ وَ مَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِیْمَ لِاَبِیْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ

दोज़ख़ी हैं[266] और इब्राहीम का अपने बाप[267] की बख़्शिश चाहना वोह तो न था मगर एक वा'दे के सबब

وَّعَدَهَاۤ اِیَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَیَّنَ لَهٗۤ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِیْمَ

जो उस से कर चुका था[268] फिर जब इब्राहीम को खुल गया कि वोह **अल्लाह** का दुश्मन है उस से तिन्का तोड़ दिया (ला तअ़ल्लुक़ हो गया)[269] बेशक इब्राहीम ज़रूर

259 : तमाम गुनाहों से **260 :** **अल्लाह** के फ़रमां बरदार बन्दे जो इख़्लास के साथ उस की इ़बादत करते हैं और इ़बादत को अपने ऊपर लाज़िम जानते हैं **261 :** जो हर ह़ाल में **अल्लाह** की ह़म्द करते हैं। **262 :** या'नी नमाज़ों के पाबन्द और इन को ख़ूबी से अदा करने वाले **263 :** और उस के अह़काम बजा लाने वाले येह लोग जन्नती हैं **264 :** कि वोह **अल्लाह** का अ़हद वफ़ा करेंगे तो **अल्लाह** तआ़ला उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। **265 शाने नुज़ूल :** इस आयत के शाने नुज़ूल में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं : (1) नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने चचा अबू त़ालिब से फ़रमाया था कि मैं तुम्हारे लिये इस्तिग़्फ़ार करूंगा जब तक कि मुझे मुमानअ़त न की जाए तो **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर मुमानअ़त फ़रमा दी। (2) सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं ने अपने रब से अपनी वालिदा की ज़ियारते क़ब्र की इजाज़त चाही उस ने मुझे इजाज़त दी फिर मैं ने उन के लिये इस्तिग़्फ़ार की इजाज़त चाही तो मुझे इजाज़त न दी और मुझ पर येह आयत नाज़िल हुई ''مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ'' अक़ूलु (मैं कहता हूं) : येह वज्ह शाने नुज़ूल की सह़ीह़ नहीं है क्यूं कि येह ह़दीस ह़ाकिम ने रिवायत की और इस को सह़ीह़ बताया और ज़हबी ने ह़ाकिम पर ए'तिमाद कर के मीज़ान में इस की तस्ह़ीह़ की लेकिन ''मुख़्तसरुल मुस्तदरक'' में ज़हबी ने इस ह़दीस की तज़्ईफ़ की और कहा कि अय्यूब बिन हानी को इब्ने मुईन ने ज़ईफ़ बताया है, इलावा बरीं येह ह़दीस बुख़ारी की ह़दीस के मुख़ालिफ़ भी है जिस में इस आयत के नुज़ूल का सबब आप का वालिदा के लिये इस्तिग़्फ़ार करना नहीं बताया गया बल्कि बुख़ारी की ह़दीस से येही साबित है कि अबू त़ालिब के लिये इस्तिग़्फ़ार करने के बाब में येह ह़दीस वारिद हुई, इस के इलावा और ह़दीसें जो इस मज़्मून की हैं जिन को त़बरानी और इब्ने सा'द और इब्ने शाहीन वग़ैरा ने रिवायत किया है वोह सब ज़ईफ़ हैं, इब्ने सा'द ने त़बक़ात में ह़दीस की तख़्रीज के बा'द इस को ग़लत़ बताया और सनदुल मुह़द्दिसीन इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी ने अपने रिसाले अत्त'ज़ीम वल मिन्नह में इस मज़्मून की तमाम अह़ादीस को मा'लूल बताया, लिहाज़ा येह वज्हे शाने नुज़ूल में सह़ीह़ नहीं और येह साबित है इस पर बहुत दलाइल क़ाइम हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा मुवह्ह़िदा और दीने इब्राहीमी पर थीं। (3) बा'ज़ अस्ह़ाब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अपने आबा के लिये इस्तिग़्फ़ार करने की दरख़्वास्त की थी, इस पर येह आयत नाज़िल हुई **266 :** शिर्क पर मरे **267 :** या'नी आज़र **268 :** इस से या तो वोह वा'दा मुराद है

لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ

बहुत आहें करने वाला[270] मुतहम्मिल है और **अल्लाह** की शान नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत कर के गुमराह फ़रमाए[271]

حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ

जब तक उन्हें साफ़ न बता दे कि किस चीज़ से उन्हें बचना चाहिये[272] बेशक **अल्लाह** सब कुछ जानता है बेशक **अल्लाह**

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ

ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत जिलाता है और मारता है और **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ

तुम्हारा कोई वाली और न मददगार बेशक **अल्लाह** की रह़मतें मुतवज्जेह हुईं इन ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) और उन मुहाजिरीन

وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ

और अन्सार पर जिन्हों ने मुश्किल की घड़ी में इन का साथ दिया[273] बा'द इस के कि क़रीब था कि

قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٧﴾

उन में कुछ लोगों के दिल फिर जाएं[274] फिर उन पर रह़मत से मुतवज्जेह हुवा[275] बेशक वोह उन पर निहायत मेहरबान रह़म वाला है

जो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने आज़र से किया था कि मैं अपने रब से तेरी मग़्फ़िरत की दुआ़ करूंगा या वोह वा'दा मुराद है जो आज़र ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से इस्लाम लाने का किया था। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई ''سَاَسْتَغْفِرُ لَکَ رَبِّیْ'' तो मैं ने सुना कि एक शख़्स अपने वालिदैन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कर रहा है बा वुजूदे कि वोह दोनों मुश्रिक थे तो मैं ने कहा तू मुश्रिकों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करता है उस ने कहा क्या इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने आज़र के लिये दुआ़ न की थी वोह भी तो मुश्रिक था, येह वाक़िआ़ मैं ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से ज़िक्र किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इस्तिग़्फ़ार ब उम्मीदे इस्लाम था जिस का आज़र आप से वा'दा कर चुका था और आप आज़र से इस्तिग़्फ़ार का वा'दा कर चुके थे जब वोह उम्मीद मुन्क़त़अ़ हो गई तो आप ने उस से अपना अ़लाक़ा क़त़्अ़ (तअ़ल्लुक़ ख़त्म) कर दिया **269 :** और इस्तिग़्फ़ार करना तर्क फ़रमा दिया। **270 :** ''कसीरुद्दुआ़ मुतज़र्रेअ़'' (बहुत ज़ियादा दुआ़ और इज़्हारे इज्ज़ो ख़ुशूअ़ करने वाला) **271 :** या'नी उन पर गुमराही का हुक्म करे और उन्हें गुमराहों में दाख़िल फ़रमा दे **272 :** मा'ना येह हैं कि जो चीज़ मम्नूअ़ है और उस से इज्तिनाब वाजिब है इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस वक़्त तक अपने बन्दों की गिरिफ़्त नहीं फ़रमाता जब तक कि उस की मुमानअ़त का साफ़ बयान **अल्लाह** की त़रफ़ से न आ जाए लिहाज़ा क़ब्ले मुमानअ़त उस फ़े'ल के करने में ह़रज नहीं। (مدارک وخازن) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस चीज़ की जानिब शरअ़ से मुमानअ़त न हो वोह जाइज़ है। **शाने नुज़ूल :** जब मोमिनीन को मुश्रिकीन के लिये इस्तिग़्फ़ार करने से मन्अ़ फ़रमाया गया तो उन्हें अन्देशा हुवा कि हम पहले जो इस्तिग़्फ़ार कर चुके हैं कहीं उस पर गिरिफ़्त न हो, इस आयत से उन्हें तस्कीन दी गई और बताया गया कि मुमानअ़त का बयान होने के बा'द उस पर अ़मल करने से मुआख़ज़ा होता है। **273 :** या'नी ग़ज़्वए तबूक में जिस को ग़ज़्वए उ़सरत भी कहते हैं। इस ग़ज़्वे में उ़सरत (मुफ़्लिसी व तंगी) का येह ह़ाल था कि दस दस आदमियों में सुवारी के लिये एक एक ऊंट था, नौबत ब नौबत (बारी बारी) उसी पर सुवार हो लेते थे और खाने की क़िल्लत का येह ह़ाल था कि एक एक खजूर पर कई कई आदमी बसर करते थे, इस त़रह़ कि हर एक ने थोड़ी थोड़ी चूस कर एक घूंट पानी पी लिया, पानी की भी निहायत क़िल्लत थी, गरमी शिद्दत की थी, प्यास का ग़लबा और पानी नापैद, इस ह़ाल में सह़ाबा अपने सिद्क़ो यक़ीन और ईमानो इख़्लास के साथ हुज़ूर की जां निसारी में साबित क़दम रहे। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ने अ़र्ज़ किया **: या रसूलल्लाह! अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ फ़रमाइये। फ़रमाया : क्या तुम्हें येह ख़्वाहिश है? अ़र्ज़ किया : जी हां। तो हुज़ूर ने दस्ते मुबारक उठा कर दुआ़ फ़रमाई और अभी दस्ते मुबारक उठे ही हुए थे कि **अल्लाह** तआ़ला ने अब्र भेजा, बारिश हुई, लश्कर सैराब हुवा, लश्कर वालों ने अपने बरतन भर लिये, इस के बा'द जब आगे चले तो ज़मीन ख़ुश्क थी, अब्र ने लश्कर के बाहर बारिश ही नहीं की, वोह ख़ास उसी लश्कर को सैराब करने के लिये भेजा गया था। **274 :** और वोह इस शिद्दत व सख़्ती में रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से जुदा होना गवारा करें। **275 :** और वोह साबिर व साबित रहे और उन का

www.dawateislami.net

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ

और उन तीन पर जो मौक़ूफ़ रखे गए थे[276] यहां तक कि जब ज़मीन इतनी वसीअ़ हो कर उन पर

بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ

तंग हो गई[277] और वोह अपनी जान से तंग आए[278] और उन्हें यक़ीन हुवा कि **अल्लाह** से पनाह

اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ

नहीं मगर उसी के पास फिर[279] उन की तौबा क़बूल की, कि ताइब रहें बेशक **अल्लाह** ही तौबा क़बूल करने वाला

١٤ ع ٨ ٣ الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

मेहरबान है ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो[280] और सच्चों के साथ हो[281]

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا

मदीने वालों[282] और उन के गिर्द दीहात वालों को लाइक़ न था कि रसूलुल्लाह से

عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

पीछे बैठ रहें[283] और न येह कि उन की जान से अपनी जान प्यारी समझें[284] येह इस लिये कि उन्हें

لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ

जो प्यास या तक्लीफ़ या भूक **अल्लाह** की राह में पहुंचती है और जहां ऐसी जगह क़दम

इख़्लास महफ़ूज़ रहा और जो ख़त़रा दिल में गुज़रा था उस पर नादिम हुए। **276 :** तौबा से, जिन का ज़िक्र आयत "وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ" में है और येह तीन साहिब का'ब बिन मालिक और हिलाल बिन उमय्या और मरारह बिन रबीअ़ हैं येह सब अन्सारी थे। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तबूक से वापस हो कर इन से जिहाद में ह़ाज़िर न होने की वज्ह दरयाफ़्त फ़रमाई और फ़रमाया : ठहरो ! जब तक **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे लिये कोई फ़ैसला फ़रमाए और मुसल्मानों को इन लोगों से मिलने जुलने कलाम करने से मुमानअ़त फ़रमा दी ह़त्ता कि इन के रिश्तेदारों और दोस्तों ने इन से कलाम तर्क कर दिया यहां तक कि ऐसा मा'लूम होता था कि इन को कोई पहचानता ही नहीं और इन की किसी से शनासाई (वाक़िफ़िय्यत) ही नहीं, इस हाल पर इन्हें पचास रोज़ गुज़रे। **277 :** और उन्हें कोई ऐसी जगह न मिल सकी जहां एक लम्ह़े के लिये उन्हें क़रार होता, हर वक़्त परेशानी और रन्जो ग़म बेचैनी व इज़्तिराब में मुब्तला थे। **278 :** शिद्दते रन्जो ग़म से, न कोई अनीस (दोस्त) है जिस से बात करें न कोई ग़म ख़्वार जिसे ह़ाले दिल सुनाएं, वह़्शतो तन्हाई है और शबो रोज़ की गिर्या व ज़ारी। **279 : अल्लाह** तआ़ला ने उन पर रह़्म फ़रमाया और **280 :** मआ़सी तर्क करो **281 :** जो सादिक़ुल ईमान हैं, मुख़्लिस हैं, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की इख़्लास के साथ तस्दीक़ करते हैं। सईद बिन जुबैर का क़ौल है कि सादिक़ीन से ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا मुराद हैं। इब्ने जरीर कहते हैं कि मुहाजिरीन। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह लोग जिन की निय्यतें साबित रहीं और क़ल्ब व आ'माल मुस्तक़ीम और वोह इख़्लास के साथ गज़्वए तबूक में ह़ाज़िर हुए। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि इज्माअ़ हुज्जत है क्यूं कि सादिक़ीन के साथ रहने का हुक्म फ़रमाया, इस से उन के क़ौल का क़बूल करना लाज़िम आता है। **282 :** यहां अहले मदीना से मदीनए त़य्यिबा में सुकूनत रखने वाले मुराद हैं ख़्वाह वोह मुहाजिरीन हों या अन्सार। **283 :** और जिहाद में ह़ाज़िर न हों **284 :** बल्कि उन्हें हुक्म था कि शिद्दतो तक्लीफ़ में हुज़ूर का साथ न छोड़ें और सख़्ती के मौक़अ़ पर अपनी जानें आप पर फ़िदा करें।

www.dawateislami.net

مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ

रखते हैं[285] जिस से काफ़िरों को ग़ैज़ (ग़ुस्सा) आए और जो कुछ किसी दुश्मन का बिगाड़ते हैं[286] इस सब के बदले उन के लिये

عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۙ﴿۱۲۰﴾ وَلَا يُنْفِقُوْنَ

नेक अ़मल लिखा जाता है[287] बेशक **अल्लाह** नेकों का नेग (अज्र व इन्आ़म) ज़ाएअ़ नहीं करता और जो कुछ ख़र्च करते

نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ

हैं छोटा[288] या बड़ा[289] और जो नाला तै करते हैं सब उन के लिये लिखा जाता है

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ

ताकि **अल्लाह** उन के सब से बेहतर कामों का उन्हें सिला दे[290] और मुसल्मानों से येह तो हो नहीं सकता

لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْ لَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ

कि सब के सब निकलें[291] तो क्यूं न हुवा कि उन के हर गुरौह में से[292] एक जमाअ़त निकले

لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْۤا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ

कि दीन की समझ ह़ासिल करें और वापस आ कर अपनी क़ौम को डर सुनाएं[293] इस उम्मीद पर कि

285 : और कुफ़्फ़ार की ज़मीन को अपने घोड़ों के सुमों (पाउं के खुरों) से रौंदते हैं **286 :** क़ैद कर के या क़त्ल कर के या ज़ख़्मी कर के या हज़ीमत (शिकस्त) दे कर। **287 :** इस से साबित हुवा कि जो शख़्स इत़ाअ़ते इलाही का क़स्द करे उस का उठना, बैठना, चलना, ह़रकत करना, साकिन रहना, सब नेकियां हैं, **अल्लाह** के यहां लिखी जाती हैं। **288 :** या'नी क़लील मसलन एक खजूर। **289 :** जैसा कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जैशे उ़सरत में ख़र्च किया। **290 :** इस आयत से जिहाद की फ़ज़ीलत और इस का ह़ुस्नुल आ'माल होना साबित हुवा **291 :** और एक दम अपने वत़न ख़ाली कर दें। **292 :** एक जमाअ़त वत़न में रहे और **293 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि क़बाइले अ़रब में से हर हर क़बीले से जमाअ़तें सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के ह़ुज़ूर में ह़ाज़िर होतीं और वोह ह़ुज़ूर से दीन के मसाइल सीखते और तफ़क़्क़ोह (दीन में समझ बूझ) ह़ासिल करते और अपने लिये अह़काम दरयाफ़्त करते और अपनी क़ौम के लिये ह़ुज़ूर उन्हें **अल्लाह** और रसूल की फ़रमां बरदारी का ह़ुक्म देते और नमाज़, ज़कात, वग़ैरा की ता'लीम के लिये उन्हें उन की क़ौम पर मामूर फ़रमाते। जब वोह लोग अपनी क़ौम में पहुंचते तो ए'लान कर देते कि जो इस्लाम लाए वोह हम में से है और लोगों को ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाते और दीन की मुख़ालफ़त से डराते यहां तक कि लोग अपने वालिदैन को छोड़ देते और रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم उन्हें दीन के तमाम ज़रूरी उ़लूम ता'लीम फ़रमा देते। (خازن) येह रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم का मो'जिज़ए अ़ज़ीमा है कि बिल्कुल बे पढ़े लोगों को बहुत थोड़ी देर में दीन के अह़काम का आ़लिम और क़ौम का हादी (रहनुमा) बना देते थे। इस आयत से चन्द मसाइल मा'लूम हुए : **मस्अला :** इल्मे दीन ह़ासिल करना फ़र्ज़ है। जो चीज़ें बन्दे पर फ़र्ज़ व वाजिब हैं और जो इस के लिये मम्नूअ़ व ह़राम हैं उस का सीखना फ़र्ज़े ऐन है और इस से ज़ाइद इल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़े किफ़ाया। ह़दीस शरीफ़ में है : इल्म सीखना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है। इमाम शाफ़ेई رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि इल्म सीखना नफ़्ल नमाज़ से अफ़ज़ल है। **मस्अला :** त़लबे इल्म के लिये सफ़र का ह़ुक्म ह़दीस शरीफ़ में है : जो शख़्स त़लबे इल्म के लिये राह चले **अल्लाह** उस के लिये जन्नत की राह आसान करता है। (ترمذی) **मस्अला :** फ़िक़्ह अफ़ज़ल तरीन उ़लूम है। ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला जिस के लिये बेहतरी चाहता है उस को दीन में फ़क़ीह बनाता है, मैं तक़्सीम करने वाला हूं और **अल्लाह** तआ़ला देने वाला है। (بخاری و مسلم) ह़दीस में है : एक "फ़क़ीह" शैत़ान पर हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा सख़्त है। (ترمذی) "फ़िक़्ह" अह़कामे दीन के इल्म को कहते हैं। फ़िक़्हे मुस्त़लह़ इस का सह़ीह़ मिस्दाक़ है।

www.dawateislami.net

يَحْذَرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ

वोह बचें[294] ऐ ईमान वालो जिहाद करो उन काफ़िरों से जो तुम्हारे क़रीब

الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

हैं[295] और चाहिये कि वोह तुम में सख़्ती पाएं और जान रखो कि अल्लाह परहेज़ गारों के साथ है[296]

وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖۤ

और जब कोई सूरत उतरती है तो उन में कोई कहने लगता है कि उस ने तुम में किस के ईमान को तरक़्क़ी

اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَ

दी[297] तो वोह जो ईमान वाले हैं उन के ईमान को उस ने तरक़्क़ी दी और वोह ख़ुशियां मना रहे हैं और

اَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا

जिन के दिलों में आज़ार (बीमारी) है[298] उन्हें और पलीदी पर पलीदी बढ़ाई[299] और कुफ़्र ही

وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ

पर मर गए क्या उन्हें[300] नहीं सूझता कि हर साल एक या दो बार आज़्माए

مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ

जाते हैं[301] फिर न तो तौबा करते हैं न नसीहत मानते हैं और जब कोई सूरत

سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ

उतरती है उन में एक दूसरे को देखने लगता है[302] कि कोई तुम्हें देखता तो नहीं[303] फिर पलट जाते हैं[304]

صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ

अल्लाह ने उन के दिल पलट दिये[305] कि वोह ना समझ लोग हैं[306] बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़

294 : अज़ाबे इलाही से अह़कामे दीन का इत्तिबाअ़ कर के। **295 :** क़िताल तमाम काफ़िरों से वाजिब है क़रीब के हों या दूर के लेकिन क़रीब वाले मुक़द्दम हैं फिर जो उन से मुत्तसिल हों ऐसे ही दरजा ब दरजा। **296 :** उन्हें ग़लबा देता है और उन की नुसरत फ़रमाता है। **297 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन आपस में ब त़रीक़े इस्तिहज़ा ऐसी बातें कहते हैं, उन के जवाब में इर्शाद होता है : **298 :** शक व निफ़ाक़ का **299 :** कि पहले जितना नाज़िल हुवा था उसी के इन्कार के वबाल में गिरिफ़्तार थे, अब जो और नाज़िल हुवा उस के इन्कार की ख़बासत में भी मुब्तला हुए। **300 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन को **301 :** अमराज़ व शदाइद और क़ह़त़ वग़ैरा के साथ। **302 :** और आंखों से निकल भागने के इशारे करता है और कहता है : **303 :** अगर देखता हुवा तो बैठ गए वरना निकल गए। **304 :** कुफ़्र की त़रफ़ **305 :** इस सबब से **306 :** अपने नफ़्अ़ व ज़रर को नहीं सोचते।

www.dawateislami.net

رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ

लाए तुम में से वोह रसूल[307] जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले

بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ

मुसल्मानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान[308] फिर अगर वोह मुंह फेरें[309] तो तुम फ़रमा दो कि मुझे **अल्लाह** काफ़ी है

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۲۹﴾ ع ۱۶ ۵

उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है[310]

اٰيَاتُهَا ۱۰۹ ۱۰ سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ ۵۱ رُكُوْعَاتُهَا ۱۱

सूरए यूनुस मक्किय्या है इस में एक सो नव आयतें और ग्यारह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

الٓرٰ ۚ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿۱﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ

येह ह़िक्मत वाली किताब की आयतें हैं क्या लोगों को इस का अचम्भा (तअ़ज्जुब) हुवा कि हम ने उन में से

اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنَّ لَهُمْ اَلْمَنْزِلُ الثَّالِث 3

एक मर्द को वह़्य भेजी कि लोगों को डर सुनाओ[2] और ईमान वालों को ख़ुश ख़बरी दो कि उन के लिये

قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲﴾ وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

उन के रब के पास सच का मक़ाम है काफ़िर बोले बेशक येह तो खुला जादूगर है[3]

307 : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अ़रबी क़ुरशी जिन के ह़सब व नसब को तुम ख़ूब पहचानते हो कि तुम में सब से आ़ली नसब हैं और तुम उन के सिदक़ो अमानत, ज़ोहदो तक़्वा, त़हारतो तक़द्दुस और अख़्लाक़े ह़मीदा को भी ख़ूब जानते हो और एक क़िराअत में ''اَنْفَسِكُمْ'' ब फ़त्ह़ ''فا'' आया है, इस के मा'ना हैं कि तुम में सब से नफ़ीस तर और अशरफ़ो अफ़्ज़ल । इस आयते करीमा में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी या'नी आप के मीलादे मुबारक का बयान है । तिरमिज़ी की ह़दीस से भी साबित है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी पैदाइश का बयान क़ियाम कर के फ़रमाया । **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मह़फ़िले मीलादे मुबारक की अस्ल क़ुरआनो ह़दीस से साबित है । **308 :** इस आयत में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपने दो नामों से मुशर्रफ़ फ़रमाया, येह कमाले तक्रीम है इस सरवरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की **309 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार आप पर ईमान लाने से ए'राज़ करें **310 :** ह़ाकिम ने मुस्तदरक में उबय इब्ने का'ब से एक ह़दीस रिवायत की है कि ''لَقَدْ جَآءَكُمْ'' से आख़िर सूरत तक दोनों आयतें क़ुरआने करीम में सब के बा'द नाज़िल हुईं । **1 :** सूरए यूनुस मक्किय्या है सिवाए तीन आयतों के ''فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ'' से । इस में ग्यारह रुकूअ़ और एक सो नव आयतें और एक हज़ार आठ सो बत्तीस कलिमे और नव हज़ार निनानवे ह़र्फ़ हैं । **2 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया जब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को रिसालत से मुशर्रफ़ फ़रमाया और आप ने इस का इज़्हार किया तो अ़रब मुन्किर हो गए और उन में से बा'ज़ों ने येह कहा कि **अल्लाह** इस से बरतर है कि किसी बशर को रसूल बनाए । इस पर येह आयात नाज़िल हुईं । **3 :** कुफ़्फ़ार ने पहले तो बशर का रसूल होना क़ाबिले तअ़ज्जुब व इन्कार क़रार दिया और फिर जब हुज़ूर के मो'जिज़ात

www.dawateislami.net